प्रतिध्वनि

काव्य-संग्रह

कवयित्री

बिमला रावत सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN - 978-81-933339-4-5

के.बी.एस प्रकाशन

18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007

शाखा कार्यालय :- 61, शिवालिक अपार्टमेंट, अलकनंदा, नई दिल्ली-110019

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटवेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950, 7532868696

e-mail :- kbsprakashan@gmail.com

Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in

मूल्यः 300.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2016 © बिमला रावर सक्सेना

मुद्रक :- कॉम्पेक्ट प्रिंटर दिल्ली

आवरण : - संजय कुमार

PRATIDHWANI KAVYA-SANGRAH

by Bimla Ravar Saxena

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आत्मकथन

असत्य से सत्य का, अशिव से शिव का, असुन्दर से सुन्दर का संघर्ष जीवन की भाँति ही साहित्य और कला के क्षेत्र में भी एक चिरन्तन और निरंतर संघर्ष है और हर युग में जो सत्य, शिव और सुन्दर होता है वही काल क्षेत्र के व्यवधान को लाँघकर बचा रहता है। कवि भी प्राणों में साधना का विनम्र दीपक जलाए तिमिर को चीरते हुए जनता के भव्य भविष्य की कल्पना करते हुए अपने काल की अच्छाइयों और बुराइयों को अपने हृदय की भावनाओं, वेदनाओं और संवेदनाओं से मिश्रित कर उन्हें परिष्कृत कर अपने पाठकों के हृदय के साथ एकाकार होना चाहता है कि लोग कह सकें, 'यह तो मेरी ही कहानी है, मैं भी तो ये सब सोचता हूँ और कहना चाहता हूँ।'

मेरा छठा काव्य संकलन, मेरी 15 वर्ष की आयु से 75 वर्ष की आयु तक लिखी, सँभाल-सँभाल कर रखी कविताओं के ख़ज़ाने में से चुन-चुनकर संकलित की गईं कविताओं की एक भेंट है आपके लिए। इसे अपने सुधि पाठकों के कर कमलों में समर्पित करती हूँ। इस विश्वास के आधार पर कि पाठकों, आपका स्नेह और प्रोत्साहन मुझे मिलता रहेगा। मैं अपने प्रिय कवि मित्र, छोटे भाई एवं मार्गदर्शक श्री केदारनाथ 'शब्द मसीहा' जी तथा के.बी.एस प्रकाशन के प्रकाशक श्री संजय 'शाफ़ी' जी को उनके सहयोग और परिश्रम के लिए हार्दिक धन्यवाद करती हूँ।

बिमला रावर सक्सेना
बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
धौली प्याऊ, नई दिल्ली-110018
दूरभाषः- 011-25533221

प्रतिध्वनि 'शब्द मसीहा' की दृष्टि में

कविता एक दृष्टि है और मैं यह तो कदापि नहीं मानता कि कविता सिर्फ़ छंद में ही लिखी जा सकती है। भावों का कोई निश्चित क्रम नहीं होता, अतः यह ज़रूरी है कि मौलिकता और सहजता कविता में रहे और भाव सम्प्रेषण पूर्ण हो। अतः इस कसौटी पर इस काव्य-संग्रह को मैं सफल मानता हूँ। इसमें शामिल कविताओं में आपको कहीं ऐसा नहीं लगेगा कि कोई विद्वता झाड़ी जा रही है या फिर कोई प्रवचन हो रहा है बल्कि आप महसूस कर सकेंगे कि यह तो कहीं आप के आसपास की ही बात है। आपको कोई शब्दकोष भी लेकर बैठने की ज़रूरत महसूस नहीं होगी। मैं इसको एक बड़ी कामयाबी मानता हूँ कविता और कवयित्री की।

बिमला रावर सक्सेना जी की बहुत सी कविताओं का मैं श्रोता भी रहा हूँ और पाठक भी। यह मेरा सौभाग्य है कि उनका मातृवत स्नेह मुझे मिलता रहा है। वह मेरी बड़ी बहन भी हैं ऐसा आप कह सकते हैं। उनके रचना संसार में अनेक रंग हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे अपने घर में अनेक पौधों को पालती-पोसती हैं। मैं उनको और उनके जीवन को पिछले कई वर्षों से जानता हूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि ये कवितायें उनका भोगा यथार्थ हैं और साथ ही उनके मनन और मंथन का अमृत भी। ऐसे में यह भ्रम मन में बना ही रहता है कि रचनाओं के विषय में लिखते कोई पक्षपात न हो जाये मगर साहित्यिक ज़िम्मेदारी इसको करने नहीं देती।

आप लगभग पचहत्तर वर्ष की वय प्राप्त कर चुकी हैं और अपने विद्यार्थी जीवन से निरंतर लिख रही हैं। अगर ऐसा कहा जाये कि वे स्वयं में बहुआयामी कविता हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। आप जब उनकी रचनाओं से रूबरू होते हैं तो आप उस मनोदशा से भी दो चार होते हैं। वास्तव में शब्द सेतु का काम करते हैं, हृदयों के मध्य और कवितायें तो उस सेतु को फूलों से सजा और महका देती हैं।

आप देखिये कि व्यथा का कविता में कैसे रूपांतरण होता है:-

जब जीभ नहीं कुछ कह पाती
तब क़लम बोलने लगती है

जब हिलना होंठ भूल जाते
अँगुलियाँ थिरकने लगती हैं

हर रचना की यात्रा ऐसे ही शुरू होती है। हर एक जब लिखता है तो मन में यही भाव रहता है कि-

सुनेगा कौन रुदन मेरा
ये नीरव मौन रुदन मेरा
हिली है विश्वासों की नींव
गिरी है अरमानों की भीत

जीवन में आशा और निराशा का संचार निरंतर रहता है। मन की परिस्थितियाँ सदैव परिवर्तनशील रहती हैं। जब कभी आस टूटती है तो एक वेदना कह उठती है:-

झूठे ही किये होते, वादे तो किये होते
गुल ग़र न दे सके, तो काँटे ही दिए होते
न प्यार किया हमसे, नफ़रत तो अता करते
कोई तो तार होता, जो तुमसे बाँध लेते

वैसे तो जीवन की हर समस्या हर एक की अपनी ही और निराली होती है मगर कवयित्री को लगता है कि अगर सभी की समस्याओं का एक जैसा समाधान होता तो हम कितने सबल और सक्षम होते। वे लिखती हैं कि:-

काश जीवन के नियमों का, ऐसा प्रावधान होता
सब की एक सी समस्या का, एक ही समाधान होता

समाज की स्थिति और परिवार के बिखराव को भी उन्होंने अपनी पीड़ा दर्शाते हुए शब्द दिए हैं:-

किस तरफ़ हम जा रहे हैं
कुछ नहीं हम जानते
कुछ नहीं पहचानते
छोड़कर अपनी जड़ों को
भूलकर अपने बड़ों को

उनकी एक रचना में वे अपनी इस सोच को और भी मुखर करती हैं और लिखती हैं कि:-

न शिकवा है कोई न कोई शिकायत
मगर फिर भी कोई कमी खल रही है
बड़ी कोशिशों से दिल को ठंडा किया पर
कोई आग है जो अभी जल रही है

जीवन की भोगी हुई सच्चाई का एक रूप देखें:-

भीड़ में अकेला होना
पहले एक कहावत सा लगता था
आज उम्र के इस मोड़ पर
दर्पण की भाँति स्पष्ट हो गया

जीवन की कड़वाहट आँख बंद कर लेने से कभी ख़त्म नहीं होती बल्कि अपना विकराल रौद्र रूप लेकर सामने ज़रूर आती है, जिसको वे इस तरह बयान करती हैं:-

असलियत से आँख बंद करके हम बहल गए
आये होश में तो देख असलियत दहल गए

जीवन का शायद ही कोई रंग शेष बचा हो जो उनकी कविताओं में देखने को नहीं मिलता है। बचपन, देश, वर्तमान समस्यायें मन की उलझन और चाहत सभी कुछ उन्होंने अपनी रचनाओं में समाहित किया है। पूरी पुस्तक अच्छे-अच्छे विचारों और भावों से परिपूर्ण है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि रसज्ञ और काव्यानुरागियों को रचनाओं में अपनत्व का भाव मिलेगा।

मैं बहिन बिमला रावर सक्सेना जी और प्रकाशक जी को बधाई और शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ।

केदार नाथ 'शब्द मसीहा'
मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक
भारतीय रेल, दिल्ली
ई-मेल : kedarnath151967@gmail.com

अनुक्रमांक

भर दो विद्या से मम गागर	15	39	मील का पत्थर
उदास सा चाँद	16	40	एक इंच मुस्कान का
एक ज़िंदगी का सफ़र	17	41	समस्या का दर्शन
काग़ज़ की आवाज़	18	42	सिर्फ़ देते हैं दुआ
जीवन मिलता नहीं दुबारा	19	43	कभी-कभी बेटी
एक अदना सी छड़ी हूँ	20	44	किस माटी की सुगंध में
खींच रही अपनी गोदी में	21	45	नवनिर्माण नहीं स्वनिर्माण
बरसों बाद	22	46	कुछ सुन्दर फूल चुने
नाराज़गी	23	47	मूक तपस्वी और मानव
मेरे देशवासियों	24	48	कोई कमी खल रही है
काँटे तो दिए होते	25	49	जीवन में मुश्किलें
मैं और सागर	26	50	एकता अपनी बचाना
जनम-मरण का साथ	27	51	मुँह में तीखी मिर्च दबाए
नीरव मौन रुदन	28	52	नई पीढ़ी के लिए
साकार प्रतिमा	29	53	सौगातें मार गईं
सबकी अपनी अलग जंग	30	54	मित्रता की आड़ में
उनके वादे	31	55	नेता है अभिनेता है
मानव छोड़ काम दानव का	32	56	बोध की किरणें
हम भूल गए उन वीरों को	33	57	ख़ूबसीरत भी बनो
जब तेरी यादें	35	58	कोई जवाब है
यात्रा-यात्रा-यात्रा	36	59	सबसे बड़ा साथी
गलघोंटू डोरियाँ	37	60	एक ख़ास उम्र के लोग
नन्हे हाथ	38	61	पूछा गुलाब ने

केवल शून्य 62
इन्सान अकेला है 63
इन्द्रधनुष का हार 64
पलछिन से भरा अमृत घट 65
दिल कहे तो 66
कभी अचानक से 67
विधि का विधान 68
मेरा स्वाभिमान 69
कर्म और फ़ल 70
अनजानी अनुभूति 71
ख़ामोशी की अनुगूँज 72
जीने का विश्वास 73
आज छेड़ कोई धुन ऐसी 74
कोई प्यारा इतिहास बाक़ी है 75
नई किरण ने खोले द्वारे 76
मैं बादल की वह बूँद 77
कोई राह नहीं मुश्किल 78
शाश्वत घर 79
चुरा लो 80
ख़ुशबू से भीगी हवायें 81
किस रफ़्तार से 82
रौशनी लाने के लिए 83
अजब सी है बेचैनी 84
संसार की रीति 85
ज़रा-सी भूल 86
अपने ढंग के अन्धे 87
यही वर्तमान 88
तब आएगा नया प्रभात 89
क्या यही है जीवन 91
कभी-कभी कोई पल 92
प्रतिध्वनि 93
अँधेरों को भगाना होगा 94
सन्देशा बादलों का 95
मेरी बेटी 96
इस बड़े बाज़ार में हर चीज़ बिकती है 97
यह दुनिया तुम्हारे लिए नहीं 98
मेरा भारत देश 99
याचक की याचना 100
मैं क्यों हूँ अकेला 101
कोई भी हल हो न पाए 102
इस तरफ़ और उस तरफ़ 103
मोरे अँगना 106
क्या कभी वक़्त रुका है 107
शीतल मंद समीर 108
एक सावन है 109
बेटी के लिए लोरियाँ 110
जीवन का जंगल 111
किसी नादानी से 112
माँ की सीख 113
उड़ गया मन 114

बड़ा शिकारी 115
कितना सुख दुख मिला 116
बेटी और चिड़ियाँ 117
तेरे भी ढंग निराले हैं 118
आस-विश्वास और लक्ष्य 119
मैंने सब से कहा मैं हवा 120
एक इंतज़ार 123
संघर्षों की गाथा 124
मेरी फ़ितरत नहीं 125
जीवन को जीवन से डर 126
कम बोलो 127
आत्मकथाः एक डोली की 128
यादों के ज़ख्म 130
आया नववर्ष 131
ज़िंदगी की बेवफ़ाई 132
कितने अकेले 133
ईश न कभी गिराना अपनी दृष्टि से 134
दोहे 135
ये ज़िंदगी सँवर जाये 136
प्रश्नों के गुच्छे 137
ये सोच कर हँस लेते हैं 138
संसार कितना सुन्दर होता 139
बड़े वृक्ष के साए में पलने वाले 140

भर दो विद्या से मम गागर

हे! दीन दयालु दीनबन्धु भर दो विद्या से मम गागर
दे दो विद्या का दान मुझे तुम भर दो गागर में सागर
विद्या रूपी धन का अर्जन होता है कठिन नहीं होता सरल
विद्या धन नित बढ़ता ही रहे जैसे बढ़ता सागर का जल
मैं निरंतर करता रहूँ यत्न मेरे यत्नों में न आये कमी
कष्टों से कभी न घबराऊँ न आँखों में भी आये नमी
हे दीन दयालु, दया सागर भर दो विद्या से मम गागर

तेरी ही दया से मेरे ईश मूरख भी कालिदास बने
डाकू बन जाये बाल्मिकि सब के जीवन में उजास भरे
रामबोला तुलसीदास बने रच डाला रामचरितमानस
हम पर भी कृपा हो जाये तेरी प्रभु द्वारे आये याचकगण
हे दयानिधि दाता सब के विद्या से भर दो मम गागर

मैं बीच भँवर में डूब रहा लगता बच पाना है मुश्किल
जीवन नैया है डूब रही कैसे निकलूँ पथ बहुत कठिन
विद्या के उजाले से मेरी अँधियारी राह ज्योतित कर दो
मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करूँ प्रभु जीवन में ज्योति भर दो
दे दो इस दास को शुद्ध-बुद्धि दो तीव्र बुद्धि जीवन सागर
हे दीन दयालु दीनबन्धु भर दो विद्या से मम गागर
दे दो विद्या का दान मुझे तुम भर दो गागर में सागर

उदास सा चाँद

उदास सा चाँद
बुझे-बुझे से तारे
देखे हैं बैठकर
सागर किनारे
चाँद की उदासी से
सागर भी चुप-सा
उसने भी ओढ़ लिया
अँधियारा घुप-सा
सिसकती हवाओं में मातम-सा छाया
पेड़ों के पत्तों ने रुदन गीत गाया
क्या सब है ऐसा
या मैं ही कहीं खोई
टूटे दिल लहरों के
तट से टकराए
रोते सिर पटक-पटक
शायद वो आये
मेरा दिल भी सागर के
साथ-साथ रोया
दोनों ने शायद
बहुत कुछ है खोया
अन्तर की पीड़ा से
कितना मैं रोई
क्यों यह दिल बार-बार
उसको पुकारे
छीन कर जो चल दिया
भाग्य के सितारे

एक ज़िंदगी का सफ़र

कुछ अपरिहार्य कारण
कुछ असम्बद्ध विचार
कुछ उच्छृंखल उद्दण्ड इच्छायें
कुछ आदर्श कुछ लक्ष्य
कुछ भावनायें कुछ कर्तव्य
कुछ कामनायें
कुछ आशायें निराशायें
कुछ विडम्बनायें
कुछ कुण्ठायें
कुछ चक्रव्यूह-सी उलझनें
कुछ व्यंग्य, हास्य
कुछ ताण्डव, लास्य
कभी अविनय, कभी अनिर्णय
कभी हालात
कभी अहसासात
और कभी वक़्त के तक़ाज़े
ये सब मिल कर ही
बनाते हैं
निभाते हैं
एक ज़िंदगी का सफ़र

काग़ज़ की आवाज़

कल अनजाने में
बातों-बातों में किसी ने कहा
काग़ज़ की आवाज़ नहीं होती
न जाने क्यों मेरे मन में
यह वाक्य बार-बार गूँजता रहा
मेरा मन कुछ प्रश्न पूछता रहा
क्या सचमुच काग़ज़ की आवाज़ नहीं होती
अगर नहीं-
तो क्यों काग़ज़ की चिट्ठी पढ़-पढ़ कर
आँखों में अक्षर नहीं नाचते वरन अक्षरों में
लिखने वाले की सूरत दिखाई देती है
कानों में लिखने वाले की आवाज़ सुनाई देती है
कभी दर्द भरी दास्तानें कभी खुशियों के तराने
सुना जाती है छोटी-सी चिट्ठी किसी के दिल के अफ़साने
काग़ज़ पर लिखी कविता और कहानियाँ
निबन्धों से मिली शिक्षायें
बड़े लोगों की प्रेरणादायक जीवनियाँ
सबके वाक्य हृदय और मस्तिष्क में
गूँज-गूँज कर कुछ कहते हैं
प्रभावित करते हैं हमारे जीवन की हर दिशा को
रामायण की एक-एक चौपाई कभी गद्‌गद् करती है
कभी झरझर आँसू बहा देती है
एक-एक शब्द अनमोल बोल बन कर
घुल जाता है जीवन में फिर कैसे मान लें कि
काग़ज़ में आवाज़ नहीं होती
काग़ज़ की टंकार तो
तलवार की झंकार से भी,
अधिक ज़ोरदार होती है

जीवन मिलता नहीं दुबारा

जीवन मिलता नहीं दुबारा
छूट जायें सब गली मोहल्ले
छूट जाये छज्जा-चौबारा
टूट जायें सब रिश्ते नाते
छूट जायेगा अपना प्यारा
छूट जायेंगे दोस्त और दुश्मन
जलन और नफ़रत का पिटारा
दिलों में रह जायेगा वो क्षण
प्रेम से जो था साथ गुज़ारा
जो दिन मिले उन्हें तो जी लें
जीवन का अमृत रस पी लें
है संतोष परम धन मानें
सब हैं अपने ऐसा मानें
सबसे बड़ा कायर सृष्टि का
वही है जो जीवन से हारा
क्यों न बनें दृढ़ इच्छाशक्ति से
अपना और दूजों का सहारा
ऐसे में क्यों न करें कुछ ऐसा
याद आयें जाने के बाद भी
जब भी नाम हमारा आये
लोग कहें वाह क्या था आदमी
जीयें शीश उठा जीवन में
फिर तो सारा जहाँ हमारा
जीवन मिलता नहीं दुबारा

एक अदना सी छड़ी हूँ

मैं-
इस घर के पुराने मालिक की एक अदना सी छड़ी हूँ
लगभग एक सदी से इस कोने में खड़ी हूँ
सोचती हूँ काश मैं चल पाती
तो अपने मालिक की चिता के साथ जल जाती
इस कोने में खड़ी रोज़ देखती हूँ बदलते ज़माने को
बदलती परिभाषाओं से गढ़े गये नित नए बहानों को
टूटते परिवारों को बिखरते घर द्वारों को
एकल परिवार में सिमटते आँखों के तारों को
कैसे दिल के टुकड़े दिल से बिछड़ जाते हैं
कैसे शहद से मधुर रिश्ते पल में बिखर जाते हैं
कभी यही घर गूँजता था ठहाकों से
आज दो बुज़ुर्ग जूझ रहे हैं फाकों से
तरसते हैं दो मीठी बातों के लिये
तड़पते हैं प्यार की सौगातों के लिये
नई पीढ़ी पंख लगाते ही उड़ गई
अपनी-अपनी मंज़िल की तरफ़ मुड़ गई
मैं इस कोने में मूक खड़ी देखती हूँ तमाशा
कैसे बदल जाती है निराशा में आशा
जिन पर लुटाये थे प्यार के सागर
जिन पर किये थे मन प्राण न्यौछावर
माता-पिता के लाडले क्यों बन गये पराये
गये तो फिर एक बार मुड़कर भी न आये
कैसे दूँ इन लुटे हुये लोगों को धीर
कैसे करूँ दूर इनके अन्तर की पीर
उफ़! मैं भी हूँ बदनसीब कितनी बड़ी
क्यों मैं चुप चाप इस कोने में खड़ी
काश मेरे पैर होते तो मैं जाती
इस घर की ख़ुशियों को फिर से घर में खींच लाती

खींच रही अपनी गोदी में

खींच रही अपनी गोदी में
लहर-लहर सागर की मुझको
हम हैं तेरे ग़म के साथी
जब हम हैं तब क्या ग़म तुझको
लहर-लहर मेरे संग नाचे
लहर-लहर मेरे संग गाती
लहर-लहर मेरे आँचल में
जाने कितने रंग भर जाती
लहर-लहर लाली भर लाती
लहर-लहर सोना बरसाती
लहर-लहर मेरे पग धोये
लहर-लहर अन्तर सरसाती
लहर-लहर बाँहें फैलाए
मेरे अंगों को सहलाती
लहर-लहर मेरे ग़म धोये
लहर-लहर मुझको बहलाती
लहर-लहर आती मुस्काती
दामन में मोती भर जाती
दिखा रही है तरह-तरह से
खेल लहर सागर की मुझको
रिझा रही है तरह-तरह से
लहर-लहर सागर की मुझको
खींच रही अपनी गोदी में
लहर-लहर सागर की मुझको

बरसों बाद

आज कुछ नया-सा करने को
जी चाहता है
दिल और दिमाग़ पर छाया अँधेरा
आज बरसों बाद भागा है
एक अछूता-सा विचार मन में जागा है
मैं तो हमेशा अपने ही ख़्यालों में डूबी रही
सारी दुनिया से और ख़ुद से भी ऊबी रही
आज अचानक ही मन में
एक सवाल आया
अपने खोल में से निकलकर
सबका ख़्याल आया
क्या मेरा अपना ग़म ही सबसे बड़ा है
सारे ग़मों का ख़ज़ाना क्या मेरे मन में ही गड़ा है
नहीं-
दुनिया में मेरे ग़म के आगे भी
बहुत कुछ है
जो मुझे करना है
मुझे अपने और परायों से मिलना है
उनके ग़म को
अपने ग़म से बढ़कर समझना है
अपने दिल के काँटों को हटाने के लिये
उनकी राहों को फूलों से भरना है
अपने ग़म को भुलाने के लिये
उनका दर्द सुनना और सँवारना है
ग़म तो सभी का साँझा होता है
और अचानक ही आज बरसों बाद
कुछ नया सा करने को जी चाहता है

नाराज़गी

मुझे सारी दुनिया से नाराज़गी है
सब इतने ज्ञानी हो गये हैं कि
स्वयं को गीता का कृष्ण समझते हैं
वे सामाजिक और सांसारिक भावनाओं में
नहीं उलझते हैं
अब उन्हें अपने कुरुक्षेत्र में
किसी कृष्ण की ज़रूरत नहीं
वे अपनी समस्याओं का स्वयं ही
निराकरण करते हैं
वे अपने गणित की जमा-घटा के अनुसार ही
आचरण करते हैं
उन्हें किसी का सुख-दुख नहीं व्यापता
वे आत्म केन्द्रित आत्मलीन है
उन्हें किसी में
कोई नहीं आस्था
सब बहुत बड़े विद्वान हो गये हैं
अर्थनीति और राजनीति पढ़ पढ़कर
महान हो गये हैं
राजनीति का प्रयोग वे बाहर ही नहीं
घर में भी करते हैं
अर्थनीति में उनके पैर कभी
चादर में नहीं रहते हैं
कहाँ से और किससे क्या लाभ मिलेगा
अर्जुन की तरह सब की दृष्टि
एक ही लक्ष्य पर लगी है
इसलिये मुझे सारी दुनिया से
नाराज़गी है

मेरे देशवासियों

मेरे देशवासियों ऊँचा नाम देश का करना है
जनम-जनम हम यहाँ रहेंगे और यहीं पर मरना है
यह धरती है भारत-माता हम सब इसके बेटे हैं
सदा शीश ऊँचा रखना हम नहीं किसी से हेठे हैं
यह धरती है महावीर की रामकृष्ण और गौतम की
जिनकी वाणी के प्रताप से सारी दुनिया चमकी
पृथ्वीराज, राणा प्रताप और वीर शिवा की यह धरती
भगत सिंह, आज़ाद, जवाहर और सुभाष की यह धरती
वेद उपनिषद् लिखने वाले साधू संत यहाँ पर जन्मे
सूर, कबीरा, तुलसी, मीरा पूजे जाते घर-घर में
राह दिखाने नई आये इस युग में थे बापू गाँधी
पथ से जिन्हें विचलित न कर सकी गोरों की काली आँधी
साल हज़ारों बीते कितने आये गये न फिर मुड़ कर
रहे यहीं घर धाम बना कर धरतीमाता से जुड़कर
कोई जाति हो कोई धर्म हो यह धरती सब की माता
जो पहचाने यह सच्चाई, नहीं लौटकर फिर जाता
जिसके चरण पखारे सागर सिर पर मुकुट हिमालय है
सब धर्मों का वास यहाँ पर घर-घर में देवालय है
हिलमिल कर सब रहें हृदय में बहे प्रेम का झरना है
पूर्ण विश्व परिवार हमारा यही हमारा सपना है
धर्म, जाति, बोली, भाषा की दीवारों को गिरना है
जन्म-जन्म हम यहाँ रहेंगे और यहीं पर मरना है

काँटे तो दिए होते

झूठे ही किए होते, वादे तो किये होते
गुल ग़र न दे सके तो, काँटे तो दिये होते
न प्यार हमसे करते नफ़रत तो अता करते
कोई तो तार होता जो तुमसे बाँध लेते
अमृत न देते विष के प्याले तो दिये होते
कुछ रोज़ हमको अपने, क़दमों में जगह देते
मेरी मोहब्बतों को यूँ तो न जिबह करते
कुछ याद करके हम भी हँसते कभी या रोते
हमने न समझा ख़ुद को क़ाबिल कभी तुम्हारे
हसरत थी लोग समझें हम हैं कोई तुम्हारे
ख़ुशफ़हमियों में हमने दो पल तो जिये होते
मेरा गुनाह क्या था तुमने नहीं बताया
तेरी बेरुखी ने ज़ालिम हर पल मुझे सताया
दो फूल अक़ीदत के हमसे भी लिये होते
झूठे ही किये होते वादे तो किये होते
गुल ग़र न दे सके तो काँटे तो दिये होते

मैं और सागर

सागर मेरी ख़ुशियाँ बन गया
मेरी ख़ुशियाँ सागर बन गईं
दोनों के इस लेने-देन में
दुनिया एक नई दुनिया बन गई
हम दोनों घंटों आपस में बतियाते हैं
दोनों एक दूसरे को
अपनी-अपनी आप बीती सुनाते हैं
कुछ बताते हैं
कुछ पूछते हैं
दोनों को ख़ुशियाँ हासिल करने के
नए नए तरीके सूझते हैं
जब मैं उसके किनारे बैठती हूँ
वह बार-बार आकर
मेरे पैरों को गुदगुदाता है
जब मैं पकड़ने दौड़ती हूँ
वह भाग जाता है
हम दोनों बच्चों की तरह
हँसते हैं, खिल-खिलाते हैं
हम दोनों के ठहाके
आपस में मिल जाते हैं
और दूर क्षितिज तक पहुँचकर
उसकी शान्ति को भंग करते हुए
फिर वापिस आ जाते हैं
हम दोनों-
मैं और सागर
सागर और मैं
एक बार फिर ज़ोर से खिलखिला पड़ते हैं
मैं फिर वही बचपन की
छोटी-सी मुनिया बन गई
और मेरी दुनिया
एक नई दुनिया बन गई

जनम-मरण का साथ

ज़िंदगी
ज़िंदगी को भूल गई
जा कर
मौत की बांहों में झूल गई
बहुत घमंड था ज़िंदगी को
ज़िंदगी पर
ज़िंदगी सिर्फ़ मेरी है
जीती रही इसी विश्वास पर
मैं अपनी ज़िंदगी जी रही हूँ
थिरकती रही इसी उल्लास पर
सिर्फ़ मैं, पर जीती रही ज़िंदगी
झूठे विश्वास पर, रीतती रही ज़िंदगी
भूल गई मौत तो साथ ही आई थी
उसके साथ तो
जनम-जनम की सगाई थी
मौत ज़िंदगी के साथ चलती रही
ज़िंदगी का एक-एक दिन गिनती रही
ज़िंदगी बड़ी शान से बीतती रही
फिर एक दिन
दोनों को याद आ गया
जनम-मरण का साथ
दोनों ने बढ़ कर हाथ मिलाया
इक दूजे को गले लगाया
मौत दोस्ती का हक़ वसूल गई
ज़िंदगी मौत की बांहों में झूल गई

नीरव मौन रुदन

सुनेगा कौन रुदन मेरा
ये नीरव मौन रुदन मेरा
हिली है विश्वासों की नींव
गिरी है अरमानों की भीत
खोखले शब्द मिले सारे
न पाया कोई निश्छल मीत
प्रेम या प्यार, नहीं कुछ भी
नहीं करता है कोई प्रीत
मरे सब अनुभूति-अहसास
जगत में हुई स्वार्थ की जीत
बिसर गईं अब सुधियाँ सारी
खो गया तन-मन तक का भान
धरा में मिला अहं सारा
शब्द झूठा था स्वाभिमान
बना जीवन, काँटों की सेज
शून्य है भाग्य गगन मेरा
सुनेगा कौन रुदन मेरा
ये नीरव मौन रुदन मेरा

साकार प्रतिमा

जब जीभ नहीं कुछ कह पाती
तब क़लम बोलने लगती है
जब हिलना होंठ भूल जाते
अँगुलियाँ थिरकने लगती हैं
उठता गुबार जब अन्तर में
झोंके बाहर आ जाते हैं
जब उठे ज्वार अन्तर्मन में
बुलबुले शब्द बन जाते हैं
मेरी अँगुली का पोर-पोर
आँखें बन अन्तर को पढ़ता
मेरे अन्तर के भावों की
साकार एक प्रतिमा गढ़ता
मेरे अन्तर की वह प्रतिमा
साकार रूप में आ जाती
काग़ज़ पर बिख़रे हर्फ़ों में
मैं उसके मुख को पढ़ पाती
काग़ज़ पर बाहर आते ही
वह प्रतिमा बोलने लगती है
जब जीभ नहीं कुछ कह पाती
तब क़लम बोलने लगती है

सबकी अपनी अलग जंग है

जीवन कितने रंग दिखाता
कभी रुलाता कभी हँसाता
क्षण में अम्बर पर चढ़ जाता
क्षण में लौट धरा पर आता

कभी सुनहरे सपने आते
कभी टूट जाते पल भर में
कभी सभी अपने बन जाते
कभी छोड़ जाते पल भर में

लगा मुखौटे तरह-तरह के
अपने सारे फ़र्ज़ निभाते
कुछ अतीत के वर्तमान के
और भविष्य के कर्ज़ चुकाते

जीवन तो होता इक मेला
जिसमें मानव जी भर खेला
कभी सभी कुछ लगे सुनहरा
कभी भीड़ में लगे अकेला

जीवन का भी अलग तमाशा
कभी है आशा कभी निराशा
कभी तोड़ देता पल भर में
कभी नया जीवन भर जाता

ख़ुशियाँ आतीं ख़ुशियाँ जातीं
जीवन के क्या अजब ढंग हैं
संघर्षों में लगे हुये सब
सबकी अपनी अलग जंग है
सबका अपना रिश्ता नाता
जीवन कितने रंग दिखाता

उनके वादे

नेता जी का साक्षात्कार चल रहा था
नेताजी का दिल वोट बैंक बनाने को मचल रहा था
बड़े नेताई अंदाज़ में प्रश्नों के उत्तर दिए जा रहे थे
एक अभिनेताई अंदाज़ में साथ-साथ मुस्कुरा रहे थे
अचानक एक प्रश्न कर्ता ने पूछाः-
नेताजी! आप वादे तो बहुत से हैं करते
किन्तु उन्हें कभी पूरा क्यों नहीं करते
नेता जी क्षण भर चुप रहकर मुस्कुरा कर बोले
देखिए! कोई भी काम आपसी समझदारी से चलता है
एक दूसरे की साझेदारी से चलता है
हमने अपना वादा करने का काम कर दिया
जनता भी साथ दे हमारा जो है हमें प्यारा
काम आपका, शहर आपका, सिर्फ़ पद है हमारा

मानव छोड़ काम दानव का

रुक गया रथ सूरज का
चाँद तारों की बारात ठिठक गई
ऐसा तो ब्रह्मांड में न कभी देखा न सुना था
जैसी घटनायें आज पृथ्वी पर घट गईं
न जाने किस जुनून में या शायद किसी लालच में
भाइयों ने बहनों को मार दिया
राखी, टीके से भरे दिलों में
गोलियों को उतार दिया
मामा, चाचा, माता-पिता ने किसी झूठी आन की ख़ातिर
बेटी, दामाद का जीवन कर दिया समाप्त
ये कैसी आग दिलों में रही है व्याप्त
कहीं पति ने पत्नी को या कहीं पत्नी ने पति को मार दिया
कहीं अपनों ने बेटी से बलात्कार किया
कुछ रुपयों की ख़ातिर किसी ने किसी का कर दिया ख़ून
कौन से लक्ष्य की है यह धुन
यहाँ जयचन्द भी कम नहीं
जो कर रहे हैं मातृभूमि से विश्वासघात
चंद पैसों की ख़ातिर बेच रहे हैं आज़ादी
भारत माँ पर यह कैसा आघात
कोई ताक़त के नशे में
कोई दौलत के नशे में है मदान्ध
यह मानव भी कितना है दुर्दान्त
यह मानव क्यों अनुशासनहीन हो रहा है
यदि हमने भी अपने नियम तोड़ दिए
तो क्या होगा इस मानव का
प्रकृति की चेतावनी है
मानव छोड़ दे काम दानव का

हम भूल गये उन वीरों को

हम भूल गये उन वीरों को
जो लगे उन्हें उन तीरों को
वो वीर जिन्होंने मातृभूमि के लिये
प्राण बलिदान किये
भारत की ज्योति जलाने को
निज बुझा दिए जीवन के दिये
जो न्यौछावर कर गये प्राण
भारत के वीर सपूतों को
जिनके बलिदानों से पाई
आज़ादी उन रणधीरों को
यह हुआ आजकल क्या सबको
सब पड़े स्वार्थ के चक्कर में
सब लालच में दीवाने हैं
हीरा ढूँढ़ें हर कंकर में
हों रातों-रात अमीर धनी
पाले अरमान अनोखे हैं
वे नहीं जानते जीवन में
कितनी बेईमानी धोखे हैं
अपने इस लालच में फँसकर
आघात देश पर करते हैं
रिश्वत चोरी डाके जैसी
न किसी बात से डरते हैं
ईश्वर का डर और नैतिकता
ये तो बेकार की बातें हैं
कुछ कुर्सी के ऊपर खाते

कुछ उसके नीचे खाते हैं
पुरखों ने हमारे, क्या ऐसे
भारत के सपने देखे थे
इन देशद्रोही जयचन्दों में
क्या बच्चे अपने देखे थे
कोयले की काली दलाली में
हम भूल गये उन हीरों को
न्यौछावर जो कर गये प्राण
भारत माँ के उन वीरों को

जब तेरी यादें

चेहरे की रंगत धनक-सी धनक उठी
जब तेरी यादें मन में महक उठीं
आँखों के आगे खिल गये सहस्त्रदल
रोम-रोम बन गया यादों का ताजमहल
पल-पल अन्तर में कैसी यह कसक उठी
जब तेरी यादें मन में महक उठीं
प्रीत निर्मोही की कैसे सताये
पल-पल हँसाये पल-पल रुलाये
ऐसे में क्यों बैरन पायलिया छनक उठी
दिल की दीवारें कैसे दरक उठीं
कोयल की कूक ने जी को जलाया
पपीहे की पी ने तुमको बुलाया
जब भी तुम याद आये दुनिया चहक उठी
चेहरे की रंगत धनक-सी धनक उठी

यात्रा-यात्रा-यात्रा

यात्रा-यात्रा-यात्रा
जीवन एक अनवरत यात्रा
रुकने का नाम नहीं
रुकने का काम नहीं
रुकना तो मौत की निशानी है
यात्रा-यात्रा-यात्रा
जब तक जीवन है
कुछ करते रहना है
जीवन का अर्थ
अनवरत बहना है
अन्यथा जीवन
ठहरा गंदला पानी है
बहने का अर्थ यात्रा सुहानी है
यात्रा-यात्रा-यात्रा
जो रुक गया
वह झुक गया
उसका दुख आया
सुख गया
संघर्षों से डरना
नादानी है
चलना ही जीवन की कहानी है
यात्रा-यात्रा-यात्रा

गलघोंटू डोरियाँ

कितने सन्दर्भों को
कितने सम्बन्धों को
कितनी डोरियों को जोड़-जोड़कर
बनाये जाते हैं कुछ रिश्ते
ऐसे रिश्ते
जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को
एक अदृश्य तार से जोड़ते हैं
फिर कहाँ से कोई कड़वी कैंची
कतरने को आ जाती है
रिश्तों की डोरियाँ
गले के हार जैसे रिश्ते
बन जाते हैं
गले की गलघोंटू डोरियाँ

नन्हे हाथ

नन्ही के हाथ से
गुब्बारे छूट कर उड़ गये
ऊँचे बहुत ऊपर
आकाश की असीमित ऊँचाइयों की ओर
नन्ही की निश्छल आँखों ने
दूर तक उनका पीछा किया
जैसे कह रही हों
मैं भी एक दिन तुम्हारी तरह
छू लूँगी
आकाश की असीमित ऊँचाइयों को
सूरज चाँद सितारों को
छू कर आऊँगी
इस नन्हे हाथ से

मील का पत्थर

ज़िंदगी की गाड़ी
पहुँच गई पाँच से पैंसठ तक
पर यात्रा तो अनवरत चल रही है
जो मील के पत्थर
पाँच की आयु में गिनने शुरू किए थे
जिन्हें गिनते-गिनते
न जाने कितने सफ़र तय किये थे
वो मील के पत्थर
आज भी मुझे आकृष्ट करते हैं
हर पत्थर पर अंकित संख्या
मंज़िल तक पहुँचाती नज़र आती है
साथ ही याद आता है
पल-पल छिन-छिन भागती
मेरी जीवन यात्रा का
प्रतिदिन, प्रतिघंटा, प्रतिक्षण
जो हर मील के पत्थर के साथ
पीछे छूटता जाता है
और दृष्टिगत होता है
एक अदृश्य मील का पत्थर
जिस पर एक अपठनीय भाषा में
अपठनीय लिपि में लिखा होता है
एक अनजानी
अपरिचित मंज़िल का नाम

एक इंच मुस्कान का

कभी-कभी
मन की गहरी पर्तों में छिपी उदासियाँ
बाहर आकर
ख़ुद से कुछ पूछना चाहती हैं
लेकिन फिर
कभी घबरा कर कभी शरमा कर
अन्दर जाकर छुप जाती हैं
और चेहरा फिर ओढ़ लेता है
मुखौटा एक इंच मुस्कान का
बन जाता है अपने ही दर्द से
अनजाना-सा
दिल की उदासियों का बोझ
चेहरे पर चिपकाई गई
झूठी मुस्कान का बोझ
करते रहते हैं परेशान
फिर भी चलता रहता है इन्सान

समस्या का दर्शन

काश जीवन के नियमों का
ऐसा प्रावधान होता
सबकी एक-सी समस्या का
एक ही समाधान होता
किन्तु समस्याओं के समाधान बँधे होते हैं
व्यक्ति, वक़्त, समाज और हालातों से
कोई उन्हें हल नहीं कर सकता
एक सी बातों से
सब काम लेते हैं अपने दिल से
हल ढूँढते हैं अपने दिमाग़ से
वक़्त की नज़ाकत सबकी एक-सी नहीं होती
निदान चाहते हैं सब अपने समाज से
किन्तु अपनी समस्या का मुक़ाबला
सब को ख़ुद ही करना पड़ता है
किसी गुरु, गाँधी या कृष्ण का दर्शन
किसी शास्त्र या मार्क्स का अवलम्बन
नहीं सुलझा पायेगा किसी की उलझन
सबके दर्शन के सार में से
कुछ-कुछ सीख लेकर
हमें अपनी समस्या का दर्शन
ख़ुद बनाना होगा
और समस्या को सुलझाना होगा

सिर्फ़ देते हैं दुआ

अँगुली दबाकर दाँत के नीचे
वो शरमाये ज़रा सा हँस दिये
यूँ लगा हमको कि जैसे
सौ दिये हों जल गये
एक पल को मुस्कुराकर
वो तो आगे बढ़ गये
रह गये बुत से खड़े हम
पैर जैसे गड़ गये
एक पल में ज़िंदगी आई
गई यह क्या हुआ
बात यह सच है कि यारों
ज़िंदगी है इक जुआ
उनका आना उनका जाना
खेल था उनके लिये
और अब हम क्या करेंगे
सिर्फ़ देते हैं दुआ
यूँ ही हमको ज़िंदगी ने
हर कदम धोखा दिया
दे रहे तसक़ीन ख़ुद को
जो हुआ अच्छा हुआ

कभी-कभी बेटी

बचपन से सुनते आये हैं
सुन-सुन कर रोते आये हैं
बेटी तो है धन ही पराया
पास इसे न कोई रख पाया
बचपन से ही शुरू हो जाती है शिक्षा
बड़ी होने तक मिल जाती है दीक्षा
बेटी जिस घर जाना उसकी बन जाना
घर के कण-कण में पानी सी मिल जाना
तुम्हें ज्ञात है पानी को जिसमें मिलाओ
धारण कर लेता वही रूप
बेटी अब तुमको सहनी है
सब उसी कुटुम्ब की छाँव-धूप
कभी किसी ने नहीं ये सोचा
बेटी भी इन्सान है
और सभी लोगों की भाँति
उसमें भी तो जान है
उसका भी कोई निजत्व है
उसका भी अपना अस्तित्व है
बेटी को पानी बनाने की सीख
कभी-कभी उसको लेकर
डूब जाती है
शायद इसी लिये कभी-कभी बेटी
किसी कुएँ, तालाब, नदी
या सागर में कूद जाती है

किस माटी की सुगन्ध में

किस तरफ़ हम जा रहे हैं
कुछ नहीं हम जानते
कुछ नहीं पहचानते
छोड़कर अपनी जड़ों को
भूल कर अपने बड़ों को
क्या किया है हमने हासिल
चल दिये पश्चिम का रुखकर
पूर्व दिशि को छोड़ कर
चल दिए अँधियारे को हम
सूर्य से मुँह मोड़ कर
बड़े बूढ़ों के जो अनुभव
उनसे कुछ सीखा नहीं
न मिली आशीष उनकी
कुछ हमें दीखा नहीं
छोड़कर अपनी सभ्यता संस्कृति
त्याग कर अपने देश की माटी
जिस माटी की सुगन्ध में
डूबे रहे सदैव उस माटी को
अपनी गंगा यमुना के अमृत जल को छोड़कर
अपनों से और अपने देश से मुँह मोड़ कर
किस नदिया के जल से
ख़ुद को रोपने, सींचने जा रहे हैं
किस तरफ़ हम जा रहे हैं

नव निर्माण नहीं स्वनिर्माण

बरसों पहले कूद पड़े थे स्वतंत्रता की लड़ाई में असंख्य भारतीय
मिटाने को अंग्रेज़ों की हुकूमत समाप्त करने को उनके कृत्य अमानवीय
हज़ारों लोग देश के लिये ख़ुशी-ख़ुशी बलिदान हो गये
बहुत से अंग्रेज़ों की गोलियों के शिकार हो गये
बहुत से फाँसी के फंदों में झूल गये
बहुत से भारत और रंगून की जेलों में मर गये
अनगिनत कालापानी गये अन्त में अंग्रेज़ गये भारत आज़ाद हो गया
लेकिन कोई भी तराज़ू आज तक नहीं बता पाया
आज़ाद भारत ने कितना खोया कितना पाया
शहीद तो नींव के पत्थर बना गये
लेकिन नए मालिक ऊँची दृढ़ इमारत न बना पाये
इसी कारण बचे हुए स्वतंत्रता सेनानी
स्वयं ही अपने स्वाभिमान को बचाने के लिये
सब कुछ छोड़ गये या उन्हें जानबूझकर
सब कुछ छोड़ने को विवश किया गया
वे सब रह गये अनाम, कुर्सियों पर लिख लिये गये नए मालिकों के नाम
भारत स्वतंत्र हो गया, गणतंत्र बन गया किन्तु स्वतंत्र भारत में
हमारे बुज़ुर्गों का रामराज्य का सपना तो सपना बनकर रह गया
रामराज्य की कल्पनायें तो कल्पनाओं में ही रह गईं
निराशा आँखों से आँसू बनकर बह गई
स्वतंत्र भारत में पुरानी रियासतें ख़त्म करके
नई रियासतें जिन्हें राज्य कहते हैं बन गईं
पुराने राजा गये और नए राजाओं का उद्‌भव हुआ
भारत के नए निर्माता अपने और अपनी सात पीढ़ियों के लिये
नव निर्माण कार्य में व्यस्त हैं
आज सत्तर साल होने को जा रहे हैं
स्वनिर्माण का कार्य चल रहा है

कुछ सुन्दर फूल चुने

मन ने कुछ सुन्दर फूल चुने
उनकी बनाई इक सुन्दर माला
फिर अपने इष्ट को याद किया
माला को उनके गले में डाला

वो फूल अदृश्य माला अदृश्य
पर इष्ट तो कण-कण में रमता
फिर क्यों न मुझे वह है दिखता
इक बार सामने आ जाओ
मेरा मन भी नए स्वप्न बुने
मन ने कुछ सुन्दर फूल चुने

फूल सूख गये इक दिन में
माला भी हट गई इक दिन में
पर तुम तो इष्ट वहीं बैठे
क्या तुम भी हो मुझसे ऐंठे
वरना जो सामने क्यों न सुने
मन ने कुछ सुन्दर फूल चुने

शायद मुझमें है भक्ति नहीं
तुम ख़ुश हो जाओ यह शक्ति नहीं
पर फिर भी तो मैं तुम्हारी हूँ
तुम पर ही तन-मन वारी हूँ
तू मेरे मन की क्यों न सुने
मन ने कुछ सुन्दर फूल चुने

मूक तपस्वी और मानव

नहीं जड़ें छोड़ेंगे अपनी,
अपनी ज़िद पर अड़े हैं
युग-युग से ये योगी यहाँ खड़े हैं
सदियों से अपनी जड़ों से जुड़े हैं
मूक ऋषि बाहें फैलाए देख रहे हैं कोई आये
सेवा उसकी हम कर पायें थोड़ी-सी छाया दे पायें
भूख लगी हो फल दे पायें मिटा थकावट बल दे पायें
बैठे कोई हमारे नीचे बात करे थोड़ी-सी हमसे
हम भी समझें अब भी हैं प्यार किया करते जो हमसे
हमें काटने वाले तो यहाँ अक़्सर आया करते हैं
काट कर हमें पशु-पक्षियों को गृहहीन बना देते हैं
तोड़ा घोंसला टूटे अंडे बच्चे भी बे-मौत मर गये
हमने बुरा किया क्या इनका रोते पंछी दूर उड़ गये
खोद दिया बिल सर्प देव का मेरी जड़ों के साथ
छुपा सर्प दिग्भ्रान्त कहे ये हुआ क्या मेरे साथ
भू लुंठित हो वृक्ष पड़ा इनका क्या ख़जानाा यहाँ गड़ा
मुझे काट-काट कर बेचेंगे बन जायेगा मानव बहुत बड़ा
मेरा तो हर भाग तुम्हारे काम का है
मरने के बाद भी बहुत कुछ दे जाऊँगा
तुम मेरे पत्ते तोड़ो छाल उतारो औषधि के आड़े नहीं आऊँगा
मैं तो तुम्हारे घर में चौखटों, दरवाज़ो छतों और फर्नीचर हर रूप में
रहता हूँ,
जब तक ज़िंदा खड़ा रहता हूँ बहुत कुछ देता हूँ
हमें काटने के बाद तुम बहुत कुछ खो दोगे जीवन में
बोधिवृक्ष के नीचे ही भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया जीवन में
हम तो सदियों से खड़े हैं मूक ऋषि से सिर उठाये
हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा जो तुम यूँ हमें काटने आये
हम मूक तपस्वियों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा हमें क्यों जड़ से उखाड़ा

कोई कमी खल रही है

न शिकवा है कोई न कोई शिकायत
मगर फिर भी कोई कमी खल रही है
बड़ी कोशिशों से दिल को ठंडा किया पर
कोई आग है जो अभी जल रही है

नई राह हमने पकड़ी तो है मगर
ये किस चाल में ज़िंदगी ढल रही है
कदम-दर-कदम एक ख़तरा-सा लगता
हर इक साँस में ज़िंदगी दहल रही है

बहुत चाहा दुनिया के संग-संग चलना
करूँ क्या कि अब दिल में बल नहीं है
कहूँ क्या मैं ख़ुद से कहूँ क्या मैं तुम से
मेरी ज़िंदगी मुझको ही छल रही है

मैं हर काम जल्दी से कर लेना चाहूँ
मगर जाने हर बात क्यों कल पे टल रही है
मेरी ज़िंदगी उलझनों में है उलझी
मेरी उलझनों का कोई हल नहीं है

फ़रिश्ता कोई आये सुलझाये ज़िंदगी को
यही आस इक मन में पल रही है
न शिकवा है न कोई शिकायत
मगर फिर भी कोई कमी खल रही है

जीवन में मुश्किलें

जीवन में मुश्किलें हर एक के जीवन में आती हैं
मुश्किलें आती भी हैं और जाती भी हैं
मुश्किलें भी ऐसी-ऐसी जिन्हें दूर कर पाना
उनसे छूटकारा पाना असंभव लगने लगता है
इन्सान भँवर में फँस होने के अहसास से और अधिक डूबने लगता है
जीवन में मुश्किलें आने का एक है विशेष कारण
इन्सान का हर चीज़ में मुश्किल ढूँढ-ढूँढ कर उनका चयन
कभी इन्सान समस्या ढूँढता है
कभी समस्या उसे ढूँढ लेती है
ऐसे में एक बार फँसने के बाद इन्सान
न पीछे हट पाता है न आगे जाने की राह निकाल पाता है
काश! जीवन में मुश्किलें न आतीं
बड़ा अजीब होता है यह शब्द "काश"
काश ऐसा न होता, काश वैसा न होता
काश ऐसा हो जाये, काश वैसा हो जाये
काश यह मिल जाये, काश वह मिल जाये
क्यों न हम "काश" को छोड़कर
एक दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ
अपनी सम्पूर्ण शक्ति बटोर कर
सिर्फ़ यह कहें :-
मुझे हर मुश्किल का डटकर मुकाबला करना है
मुझे भँवर में फँसने से पहले ही ख़ुद को सम्भालना है
दुविधाओं से दूर रहकर सीधा संघर्ष करना है
जीवन में मुश्किलें तो आती-जाती रहती हैं

एकता अपनी बचाना

देश में क्या हो रहा है
देश का दिल रो रहा है
हर तरफ़ धोखा ही धोखा
सबसे धोखा ख़ुद से धोखा
आत्मा का हनन
हरदम हो रहा है
नीति नैतिकता का
पतन क्यों हो रहा है
वेदना, संवेदना और
भावना से हीन मानव
त्याग मानवता का करके
बना हृदय से हीन दानव
देशभक्ति की लगन
क्यों खो रहा है
मातृ भू का मन रख लो
पूर्वजों की शान रख लो
कहीं कोई फूट हममें
बो रहा है
उनकी बातों में न आना
एकता अपनी बचाना
वरना हमको लूट लेने का
जतन तो हो रहा है
फूट डालो करो शासन
कहने वाले अब भी बैठे
एकता ही एक शक्ति
एकता अपनी बचाना
ख़ुद को नीचे मत गिराना

मुँह में तीखी मिर्च दबाए

बातें करते मीठी-मीठी मुँह में तीखी मिर्च दबाये
तुम्हीं कहो ऐसे लोगों से कैसे कोई खुद को बचाये
जब भी कोई मीठी बातें
करें ज़रूरत से ज़्यादा
समझो तुमको पड़ेगा करना
उससे कोई बड़ा वादा
कभी-कभी मीठी बातों से
धोखा भी हो जाता है
मीठी बातें करने वाला
ऐन समय खो जाता है
ऐसे कठिन समय में हम रह जाते हैं खड़े मुँह बाये
तुम्हीं कहो ऐसे लोगों से कैसे कोई खुद को बचाए
बदल-बदल कर रोज़ मुखौटे
लोगों को भरमाते हैं
वक़्त पड़े जब किसी मदद का
दूर खड़े शरमाते हैं
कुछ क्षण बाद न जाने कैसे
गायब वो हो जाते हैं
हम जब बुरे वक़्त से निकले.
तभी प्रकट हो जाते हैं
बड़े प्रेम से गले मिलते गजभर की मुस्कान बिछाये
तुम्हीं कहो ऐसे लोगों से कैसे कोई खुद को बचाये
बातें मीठी-मीठी करते मुँह में तीखी मिर्च दबाये

नई पीढ़ी के लिये

त्याग दिया जीर्ण गात
तज दिए पीत पात
झर-झर-झर, झर गये
जीर्ण गात पीत पात
शोक नहीं तजने का
शौक नहीं सजने का
श्रद्धा से सिर झुकाये
पुलकित नयन टिकाये
ताक रहे राह किसी अपने की
आस लगी एक नए सपने की
छोड़ दिया स्थान नई कोपलों के लिये
तज दिया जीर्ण शीर्ण गात
किसी नव प्रस्फुटित सुरभित
कुसुमित कोमल गात के लिये
नई पीढ़ी के लिये
स्थान बनाने के लिये
गीता का वचन निभाना होगा
पुराने वस्त्रों को त्याग कर
एक नवीन रूप में आना होगा
यूँ ही चलता रहता है प्रकृति का चक्कर
वृक्षों में मानव में क्या है यह अन्तर
दोनों स्थान खाली करते हैं नई पीढ़ी के लिये
दब जाते हैं माटी में नींव बनकर अगली सीढ़ी के लिये
अगली पीढ़ी के लिये

सौगातें मार गईं

खंजर की मार से बचे मगर
कुछ बातें हमको मार गईं
हम चैन से सोए जंगल में
घर की कुछ रातें मार गईं

दुनिया के तीर न मार सके
न कभी किसी से हार सके
आये तूफ़ान बड़े से बड़े
हम अडिग अकेले रहे खड़े
दुश्मन के पत्थर छू न सके
अपनों की घातें मार गईं
कुछ बातें हम को मार गईं

चाहे काँटे या फूल मिले
तीखे से तीखे शूल मिले
पर हमने सब से प्यार किया
न कभी किसी पर वार किया
फिर भी कुछ अपनों की खट्टी
कड़वी सौगातें मार गईं
कुछ बातें हमको मार गईं

दो प्यार भरी बातें चाहीं
दो चैन भरी रातें चाहीं
किस्मत के पन्नों में शायद
न चैन लिखा न प्यार लिखा
अपने प्यारों की व्यंग्य भरी
तीखी आवाज़ें मार गईं
कुछ बातें हमको मार गईं

मित्रता की आड़ में

मेरे बन्धु मित्रता की आड़ में
विश्वासघात न करो
किसी को अपना बना कर
उसकी भावनाओं पर आघात न करो
जलाकर किसी के दिल में आशाओं के दिये
उसकी आशाओं पर कुठाराघात न करो
किसी फलते-फूलते चमन को अपना कहकर
उसको काँटों की सौगात न दो
रौशनियों से झिलमिलाते किसी अपने के घर को
अँधेरों की मातमी बारात न दो
प्रेम के दो बोल नहीं दे सकते
तो व्यंग्य और उपहास के प्रहार भी न दो
मित्र तो जान पर खेलकर
मित्रता की आन बचाता है
विश्वासघाती बन कर
मित्रता शब्द को बदनाम न करो

नेता है अभिनेता है

वह बहुत बड़ा नेता है
वह अभिनेता भी बड़ा है
वह आकाश की ऊँचाइयों में रहता है
पर अपने स्वार्थ के लिये
ज़मीन पर नाक भी रगड़ सकता है
वह ग़रीबों को ऊपर उठाने के लिये
इतना झुकता है
कि उसके पैरों के नीचे की
ज़मीन खींच कर
उन्हें बहुत ऊपर पहुँचा देता है
वह बाढ़ पीड़ितों के लिये
इतना रोता है कि
अपने आँसुओं की बाढ़ में डूब कर
सारा बाढ़ पीड़ित फ़ण्ड
अपने ऊपर व्यय कर डालता है
वह आचार, विचार, अत्याचार, भ्रष्टाचार
सबको एक लाठी से हाँकता है
वह बड़े-बड़े मंदिरों में भगवान से
वी.वी.आई.पी. के रूप में मिलता है
प्रसाद भी बाँटता है
पुजारी जी भी भगवान से उसका परिचय
व्यक्तिगत रूप से करवाते हैं
भगवान भी उसे छप्पर फाड़ कर देते हैं
क्योंकि शायद
वह बहुत बड़ा नेता है
बहुत अच्छा अभिनेता है

बोध की किरणें

हम कितने ही रहें सावधान
जीवन में आते रहते हैं व्यवधान
कोई कितना ही करे अहित
पर बाधायें हो जाती हैं तिरोहित
इसी तरह चलता रहता है जीवन चक्र
कुछ समय सीधा कुछ समय वक्र
सुख का समय बहुत छोटा लगता है
छोड़ जाता है कुछ यादें मीठी-सी
दुख की घड़ियाँ सुरसा के मुख सी बड़ी होती हैं
दे जाती हैं यादें तीखी-सी
बहुत कुण्ठा और घुटन होती है
आँखें अन्दर ही अन्दर रोती हैं
ऐसे में याद आता है गीता का सन्देश
सुख-दुख को समान कर मानो
न मन में करो तनिक भी क्लेश
ऐसे में कभी-कभी भाग्य रेखा निखरती है
मानस में बोध की किरणें बिखरती हैं
अनुभव धैर्य प्रदान करता है
अनुभूति का प्रकाश होता है
कोई करता है शंका का समाधान
जीवन में संघर्ष सदा रहते हैं
उत्कर्ष और अपकर्ष सदा रहते हैं
हम कितने ही रहें सावधान
जीवन में आते रहते हैं व्यवधान

ख़ूबसीरत भी बनो

ख़ूबसूरत हो तो ख़ूबसीरत भी बनो
अक़ीदत चाहते हो तो अक़ीदत भी करो
सिर्फ़ कहने से नहीं अपना कोई हो जाता
तुम जिसे चाहते हो उसकी इबादत भी करो
अश्क आँखों से इतने न तुम बहाया करो
कीमती चीज़ है कुछ तो किफ़ायत भी करो
दूर नज़रों से किसी अपने को करते क्यों हो
किसी अपने पे कभी नज़रें इनायत भी करो
मुश्किलें हल नहीं होंगी कभी चुप रहने से
अगर समझते हो अपना तो शिकायत भी करो

कोई जवाब है

मुझे उस छोटे से बच्चे की
उन खाली खाली आँखों में देखने से
डर लगता है
झुरझुरी सी आ जाती है
क्योंकि उस खालीपन के जवाब
किसी के पास नहीं हैं
कहाँ है मेरे बापू
कहाँ है माँ
कैसे बताऊँ
उसके माँ-बापू
उस गाड़ी में गये हैं
जो कभी वापिस नहीं आयेगी
क्या बम लगाने वालों के पास
उस बच्चे के लिये
कोई जवाब है?

सबसे बड़ा साथी

क्या इन्सान कभी अकेला होता है
शायद कभी नहीं
क्योंकि अकेलेपन में भी
उसके साथ होती हैं
अतीत की यादें
वर्तमान के संघर्ष
और भविष्य के सपने
उसके रोम-रोम में बसते हैं
दूर पार के तमाम चेहरे
ख़ून की एक-एक बूँद में
रचे होते हैं उसके प्यारे अपने
उसका सबसे बड़ा साथी होता है
उसका अपना अकेलेपन का अहसास
जो उसमें जगाता है
अकेलेपन से लड़ने की ताक़त
और गहरा आत्मविश्वास

एक ख़ास उम्र के लोग

भीड़ में अकेला होना
पहले एक कहावत-सा लगता था
आज उम्र के इस मोड़ पर
दर्पण की भाँति स्पष्ट हो गया यह तथ्य
यह एक कहावत नहीं
यह है जीवन का सबसे बड़ा सत्य
घर में है पार्टी कोई उत्सव या शादी
घर में है सबको घूमने की आज़ादी
पर एक ख़ास उम्र के लोग कमरों में बन्द
लड़ रहे हैं अकेले अपनी ज़िंदगी की जंग
उनकी ज़रूरत न बच्चों को है न जवानों को
फिर वह क्यों डिस्टर्ब करें माननीय मेहमानों को
कभी-कभी याद आती है
'चीफ़ की दावत' की कहानी
कैसे एक इन्सान हो जाता है
इतना फालतू इतना बेमानी
यहीं पर आकर
इन्सान टूटने लगता है
भीड़ में अकेले होने का सन्नाटा
भीड़ में अकेलेपन का अहसास
उसकी सुख-शान्ति लूटने लगता है
जीर्ण शीर्ण शरीर में बन्द
आत्मा और हृदय को
विदीर्ण करने लगता है
आघातों की अनमिट रेखायें
उसके चेहरे पर
उत्कीर्ण करने लगता है

पूछा गुलाब ने

बहुत बार पूछा गुलाब ने
क्यों हमको काँटों की सेज मिली
सुनकर गुलाब का भोला प्रश्न
आँसू भर लाई कली-कली
धीरे से तब
एक मासूम नाज़ुक कली बोली
न दर्द हृदय में भरो मेरे हमजोली
यह सब तो है विधि का लेखा
किसको कितने हैं मिले फूल
कितने काँटे किसने देखा
न दिल को यूँ तुम तड़पाओ
न देख के काँटे घबराओ
फूलों पर साधारण जन
काँटों पर सोते भीष्म जैसे शक्तिशाली
यूँ रोज़ फूल टूटा करते
पर इक गुलाब जब-जब टूटा
रोया तब बगिया का माली

केवल शून्य

मैंने बहुत बार
अपने अस्तित्व को ढूँढने की
नाकाम कोशिश की
एक बार
जब पिता के घर
आर्थिक समस्या के कारण
भाई की पढ़ाई जारी रखने के लिये
मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ी
दूसरी बार
जब ससुराल के फ़र्ज़ निभाने के लिये
मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी
तीसरी बार
जब मुझे अपनी गृहस्थी समेट कर
बेटे के घर
एक नए शहर में
एक अपरिचित वातावरण में
एक नई शुरुआत करनी पड़ी
मैं बार-बार खुद से
और ख़ुदा से पूछती हूँ
क्या मेरा अपना कोई अस्तित्व है
क्या मेरा कोई व्यक्तित्व है
या मैं केवल शून्य हूँ
जिसका अपना कोई मूल्य नहीं
अपना कोई आकार प्रकार नहीं
जिसे अपने निर्णय लेने का
अपने हृदय और मस्तिष्क को प्रयोग करने का
कोई अधिकार नहीं

इन्सान अकेला है

जीवन के रंगों में रंग भरने
जब आ जाता है कोई अपना
लगता ऐसा जैसे होगा
पूरा कोई सुन्दर सपना
जीवन के सफ़र की मरुभूमि में
मिल जाता है इक मरुद्यान
यूँ ही सुख-दुख की राहों पर
चलता जाता है हर इन्सान
परिवार समाज सभी तो हैं
फिर भी इन्सान अकेला है
दुनिया में भीड़-भीड़ ही है
पर यह सब झूठा मेला है
दुनिया में रहकर यूँ लगता
यह दुनिया एक झमेला है
मेरे इस छोटे से दिल में
नित नए प्रश्नों का रेला है
इन प्रश्नों का सही उत्तर देने
जब मिल जाता है कोई अपना
लगता जैसे अब हो जायेगा
पूरा कोई सुन्दर सपना

इन्द्रधनुष का हार

काले-काले जल भरे बादल
सुन लो मेरी पुकार
मेरे आँगन के पेड़ों पर
जल बरसाओ धार-धार
इन पेड़ों पर बैठें खगजन
मन हर लेता उनका गुंजन
पपीहा पी-पी तान सुनाये
कूक कोयलिया मन बहलाये
तोता मैना सब पक्षीगण
झूलें उनकी डार-डार
आ कर बरसो मेरे अँगना
इन पेड़ों की प्यास बुझाओ
जब तुम बरसो तब मन सरसे
इनके मन को भी सरसाओ
बाद में जब सूरज निकलेगा
बूँदें चमकें ज्यों हीरे हज़ार
राह तुम्हारी ताक रहे हम
हाथ जोड़कर विनती करते
खेत-पात वन, उपवन, कानन
सबही राह तुम्हारी तकते
अब तो छम-छम बरसो आकर
तुम्हें पुकारें बार-बार
गरज-तरज बिजली को लाना
ढम-ढम ढोल ढमाके लाना
अब बिल्कुल न देर लगाना
हम मल्हार का गाते गाना
इन्द्रधनुष फिर आयेगा
पहनाने तुम को हार-हार
सुन लो अब मेरी पुकार

पलछिन से भरा अमृत घट

रोज़ एक वर्तमान अतीत बन जाता है
रोज़ एक आज कल बनने के लिये बीत जाता है
रोज़ पलछिन से भरा अमृत घट
हमारे हाथों से फिसल कर रीत जाता है
ज़िंदगी के कीमती लम्हों से भरे ख़जाने का
एक कीमती हिस्सा आज़ाद होकर जीत जाता है
इन्सान वक़्त की फ़ितरत से हैरान रह जाता है
सिर्फ़ एक आह भर कर इतना ही कह पाता है
काश वो एक पल, एक पल के लिए वापिस आ जाता
वक़्त भी हँसकर कहता है
गया वक़्त वापिस नहीं आता
वो तो अतीत बन जाता है दोस्त
रोज़ एक वर्तमान को अतीत बनाने से पहले
उस अमृत की एक-एक बूँद को बना लो अपना
हाथ से निकलने के बाद हर बूँद बन जायेगी सपना

दिल कहे तो

साथी मेरे-
कभी वक़्त मिले तो आ जाना
कभी वक़्त कहे तो आ जाना
फिर वक़्त से गिला न करना
कोई शिकवा या शिकायत न करना
वक़्त एक बार
सबको मौका देता है
इन्सान ही वक़्त को ठुकरा कर
पीछे रह जाता है
वक़्त तो बार-बार
उसके कानों में कह जाता है
आऊँगा
एक बार ज़रूर आऊँगा
मुझे पहचान लेना
अपनों के पास पहुँच कर
उन्हें जान लेना
एक बार चूक गये
तो जीवन भर पछताओगे
साथी की पुकार फिर
कभी न सुन पाओगे
कभी दिल कुछ सुने तो आ जाना
कभी दिल कुछ कहे तो आ जाना
कभी वक़्त मिले तो आ जाना
कभी वक़्त कहे तो आ जाना

कभी अचानक से

आ भी जाओ कभी अचानक से
ज़िंदगी फूल सी खिल जाये फिर अचानक से
चाहे रिश्ते नहीं हैं पहले से ·
फिर भी टूटेंगे कैसे कहने से
तुम अगर ख़ुश हो मेरे सहने से
आके दुख और दे दो अचानक से
तुम ख़ुशी पाओ हमको ग़म दे के
तुम रहो ख़ुश हमें सितम दे के
हम हमेशा हैं ख़ुश तुमसे जो भी मिले
कुछ भी दो तुम हमें अचानक से
कोई शिकवा भी है तो आके कहो
दूर यूँ रूठ कर न हमसे रहो
भावनाओं में कभी न इतना बहो
कि फिसल जाये वक़्त अचानक से
आ भी जाओ कभी अचानक से
ज़िंदगी फूल सी खिल जाये
फिर अचानक से

विधि का विधान

कहीं कोई खोता है कहीं कोई पाता है
दुनिया का दस्तूर हमें यही सिखाता है
किसी ने भुलाया तो कोई याद आया
किसी ने जब छोड़ा कोई साथ आया
किसी का सुख किसी का दुख बन जाता है
कोई बढ़ा आगे कोई पीछे रुक जाता है
कहीं आँख बन्द हुई
कहीं आँख खुल गई
किसी घर से गया कोई
कहीं आई ज़िंदगी नई
क्या खोया क्या पाया
कोई नहीं जान पाया
अनुभव ने यह दर्शन
हमको सिखाया
कोई बिछड़ जाते हैं
कोई मिल जाते हैं
जीवन के समीकरण
क्षण में बदल जाते हैं
नित नए प्रश्नों से
नाता जुड़ जाता है
जाने किस मोड़ पर
रास्ता मुड़ जाता है
विधि का विधान हमें
क्या-क्या दिखाता है
कहीं कोई खोता है
कहीं कोई पाता है

मेरा स्वाभिमान

अपने स्वाभिमान को
मैं ठुकरा नहीं सकती
इसलिये दुनिया के मन को
भा नहीं सकती
बस मुझे इतना बताओ
कैसे ख़ुद को भूल जाऊँ
कैसे कठपुतली बनी
हर ताल पर मैं नाचती जाऊँ
ज़रा इन्साफ़ की बातें करो
न इतना तुम सताओ
टूट जाऊँ हार कर मैं
न मुझे इतना झुकाओ
रास मुझको
आ नहीं पाती ये दुनिया
कैसे ख़ुद को भूल कर
अपनाऊँ दुनिया
जब मेरी पहचान
स्वाभिमान पर लग जायें ताले
तब यही अच्छा
कि मेरे ऐ ख़ुदा
मुझको बुला ले
क्या औरत होने की यही सज़ा है
सहती रहे अपमान को
आज की औरत जाग रही है
वह ठुकरा नहीं सकती
अपने स्वाभिमान को

कर्म और फ़ल

"कर्म कर फ़ल की इच्छा न कर तू"
उन्हें गीता का यह कथन
बहुत अच्छा लगा
और कमर कस कर
कर्म करना शुरु कर दिया
चोरी डकैती
तस्करी फ़िरौती
बड़े-बड़े कर्म बिना फ़ल की इच्छा के किए
किन्तु भगवान तो इतना अन्याय नहीं करता है
बड़े कर्म का बड़ा फ़ल देता है
उनके कर्मों का फ़ल दिया
उनको अपने जन्म धाम
कारागार में भेज दिया
उन्होंने गीता के कथन को
चरितार्थ किया
अपना जन्म
कृतार्थ किया

अनजानी अनुभूति

अगर कभी रात में
झिरती बरसात में
या चाँदनी रात में
अचानक ही
दिल उदास हो जाये
तो
बड़ी शान्ति से
बिना किसी भ्रान्ति के
समझ लेना
किसी एक विरहिन ने
याद किया छिन-छिन में
चाँदनी रात में
झिरती बरसात में
उसका ही करुण स्वर
घुल गया हवाओं में
उड़ती घटाओं में
और फिर छा गया
अनजानी अनुभूति बन
तेरे मन प्रान्तर में
चाँदनी रात में
झिरती बरसात में

ख़ामोशी की अनुगूँज

ये कैसे-कैसे अनुभव जीवन को दिशा देते हैं
कैसी-कैसी अनुभूतियाँ जीवन को प्रभावित करती हैं
जीवन के हर क्षण को, हर साँस को जीना
सम्भवतः एक संघर्षपूर्ण कार्य होता है
जीने वाले को साहस, आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति
और भी न जाने कितनी प्रेरणाओं की आवश्यकता है होती
अपनी भावनाओं, कामनाओं, वेदनाओं
और संवेदनाओं को वश में करना होता है
कभी इन्सान पलक झपकते अम्बर छू लेता है
कभी सीधा पाताल पहुँच जाता है
कभी राजा बन जाता है कभी रंक
बड़े कठिन हैं जीवन के गणित के अंक
कभी मानव भीड़ में भी ख़ुद को अकेला समझता है
और कभी अकेलापन भी उसे काटता है
कभी भीड़ में भी उसके कानों में कोई आवाज़ नहीं आती
जैसे सारी भीड़ में कोई नहीं है उसे कोई सूरत नज़र नहीं आती
कभी अकेलेपन की अनुभूति भी
उसे सिर से पाँव तक है दहलाती
किन्तु ऐसे में कई बार हम मिलते हैं
अपने अन्दर छुपी ख़ामोशी से
वो नाग जो एकांत में डसने आ जाते हैं
उनका विष हमारी ख़ामोशी में आग लगा देता है
ये ख़ामोशी हर तरफ़ चिल्लाने लगती है
उसकी चीखों से चारों दिशायें गूँजने लगती हैं
ख़ामोशी की यह अनुगूँज
कर्णरन्ध्रों को बहरा कर देती है
न जाने यह जीवन का कौन सा अनुभव होता है?

जीने का विश्वास

असलियत से आँख बन्द करके हम बहल गये
आये होश में जो देख असलियत दहल गये
कितने ही मुखौटे एक आदमी चढ़ाये है
कितने रंग एक-एक आदमी बदल रहा
कैसे एक एक परत प्याज की उतारकर
कितने ढंग एक-एक आदमी बदल रहा
कितने ऐसे हैं जो दूसरों को हैं दबा रहे
कैसे जंग अपनी कोई दबने वाला लड़ रहा
कैसे साथ चलने वाले धक्का दे निकल रहे
कैसे संग कोई पीछे रहने वाला चढ़ रहा
कैसे कोई प्यार की तलाश में भटक रहा
कैसे कोई मंज़िलों की राह में अटक गया
कैसे कोई गिरते को सम्भालने ठहर गया
कैसे मेरे जीवन का विश्वास फिर बहल गया

आज छेड़ कोई धुन ऐसी

गीत छेड़ मनवा कुछ ऐसा
जिसकी धुन में खो जाऊँ मैं
कुछ पल के ही लिये सही पर
सुख स्वप्नों में सो जाऊँ मैं
साज़ गले का रूठ गया है
जो अपना था छूट गया है
जाने कौन लुटेरा आया
मेरा सब कुछ लूट गया है
आज छेड़ कोई धुन ऐसी
खुल कर जिससे रो पाऊँ मैं
तू तो छिपा बैठा है अन्दर
जाने क्या-क्या बोल रहा है
कुछ कहता है कभी कुछ कहता
सुनकर मनवा डोल रहा है
मुझको राह बता कुछ ऐसी
अपने दुख को धो पाऊँ मैं
मेरे दिल अब साहस भर कर
रहा खोज ले अब तू कोई
आज छेड़ दे धुन कुछ ऐसी
गा न सका जो अब तक कोई
मुक्ति मिले मुझको सिर पर जो
बोझ उसे ढो पाऊँ मैं
गीत छेड़ मनवा कुछ ऐसा
जिसकी धुन में खो जाऊँ मैं

कोई प्यारा इतिहास बाकी है

यूँ तो ज़िंदगी में छाये गहन घने अँधेरे हैं
फिर भी ज़िंदगी में कहीं रौशनी की कोई किरण बाकी है
यूँ तो ज़िंदगी ने ज़िंदगी से छीन ली ज़िंदगी है मगर
फिर भी जीने का कहीं कोई तो क्षण बाकी है
हर ठोकर को एक सीख समझ कर स्वीकार कर लिया
हर व्यंग्य को एक कलाकृति का आकार दे दिया
हर विष को अमृत समझकर पान कर लिया
पर कुछ मीठे फल जो चोरी से चुरा लिये थे कभी
उन्हीं पलों में से अभी एक पल तो बाक़ी है
धीरे-धीरे उठने लगा ज़िंदगी पर से विश्वास
ज़िंदगी सिर्फ़ संघर्ष का नाम है ऐसा होने लगा आभास
चुपचाप सहते गये जो भी होते गये आघात
सहने के विश्वास पर टिकी अभी एक आस बाकी है
संस्कारों से बंधी ही विश्वास की डोर अभी टूटी नहीं बाकी है
कभी कुछ अच्छे दिनों को कैमरे में क़ैद कर लिया था
दर्द भरे दिनों में उन्हें अलमारी में छिपा दिया था
मन ने कहा क्यों देखूँ उनको जिन्होंने मुझे इतना दर्द दिया था
आज अचानक वो सब निकलकर अलमारी से बाहर आ गये
याद दिलाने कि इन चेहरों में अभी भी कुछ उल्लास मिठास बाक़ी है
सचमुच ज़िंदगी तो ज़िंदगी से रूठ जाने का नाम नहीं
ज़िंदगी घबरा कर छूट जाने का नाम नहीं
ज़िंदगी घबरा कर ख़ुद से रूठ जाने का नाम नहीं
अतीत और वर्तमान दोनों में रहती है खटास और मिठास
अतीत के उन पन्नों में छिपा कोई प्यारा इतिहास बाकी है
अभी तो ज़िंदगी में कहीं रौशनी की कोई किरण बाकी है

नई किरण ने खोले द्वारे

ऊषा ने घूँघट पट खोला
दूर हुए अँधियारे
बुद्धिद्वार को जिसने खोला
मिले उसे उजियारे
भागा घन-घन घोर अँधेरा
नई किरण ने खोली द्वारे
आया नया सवेरा
छाया चारों दिशा प्रकाश
ज्योतित रवि की किरणों जैसा
चहुँ दिशि हुआ विकास
चहुँ दिशि हुआ विकास छा गई
सब जग में हरियाली
जन-जन ने श्रमदान किया आ गई
हर घर में ख़ुशहाली
घर-घर में ख़ुशहाली आई
पूरा देश हुआ ख़ुशहाल
बुद्धि और श्रम जब मिल जायें
कोई न हो बदहाल
कोई न हो बदहाल कहे सूरज का गोला
निर्मल विमल अम्बर में देखो
ऊषा ने घूँघट पट खोला

मैं बादल की वह बूँद

मैं बादल की वह बूँद जिसे अपनी मंज़िल का पता नहीं
ये पवन कहाँ ले जायेगी वह भी तो नहीं कुछ बता रही
ले जायेगी किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे के आँगन में मुझे
या कहीं किसी जलती चिताओं के दर्द भरे श्मशानों में
क्या ले जायेगी कहीं चहकते बच्चों के विद्यालय में
या छोड़ आयेगी मुझे कहीं सन्नाटों में वीरानों में

गिर जाऊँ न कहीं किसी शराबी की हाला के प्याले में
जो झूम रहा प्याला लेकर बगीचे में मधुशाला में
बादल की गोदी में बैठी मैं उड़ी जा रही जायें जहाँ
पर कौन मुझे बतलायेगा मेरी मंज़िल का पता कहाँ
मैं खेतों में गिरना चाहूँ बन जाऊँ नाज का इक दाना
मैं उपवन में जाना चाहूँ कलियों के संग-संग खिल जाना

मैं नहीं समन्दर की गोदी में भी फिर से जाना चाहूँ
पर सीपी के मुख में गिरकर प्यारा मोती बनना चाहूँ
जंगल-जंगल पर्वत-पर्वत मैं घूम रही हूँ जग सारा
कुछ भी तो मुझको पता नहीं स्वातंत्र्य मिलेगा या कारा
मैं डोल रही उस नैया सी जिसको साहिल का पता नहीं
मैं बादल की वह बूँद जिसे अपनी मंज़िल का पता नहीं

कोई राह नहीं मुश्किल

जीवन की राहें बड़ी कठिन
इन पर चलना होता मुश्किल
लेकिन तुम कभी न घबराना
बाधाओं से न डर जाना
संघर्ष भरा जीवन रथ है
काँटों में भरा जीवन पथ है
राहों में कितने दोराहे
हैं कहीं-कहीं पर चौराहे
तुमको ख़ुद ही लेना निर्णय
बढ़ना अपने पथ पर निर्भय
तुम उचित सत्य पथ को चुनना
जीवन के सुख सपने बुनना
न कभी स्वार्थी तुम बनना
न लालच की बातें करना
यह श्लोक हमेशा याद रहे
सब रहें सुखी और स्वस्थ रहें
दुख दर्द है किसी को नहीं मिलें
कल्याण सभी का सदा रहे
सम्पूर्ण विश्व परिवार एक
सारी राहों का लक्ष्य एक
सारे धर्मों का धर्म एक
मानवता ही है धर्म एक
हम मानवता की राह चलें तो
कोई राह नहीं मुश्किल
जब सारे मानव अपने तो
जीवन की राहें कहाँ कठिन

शाश्वत घर

उसका बचपन
किराए के मकानों में
भटकते बीता था
मन में एक चाहत जगा ली
अपना मकान बनाने की
जो उसका "अपना घर" होगा
कमाई शुरू होते ही
शुरु हो गया मकान बचत अभियान
तन मन के साथ हुआ अन्याय
परन्तु एक दिन पूरा हो गया
मकान का अध्याय
उसकी ख़ुशी का अन्त नहीं था
परन्तु शायद उसकी
मुसीबतों का भी अन्त नहीं था
लाडला बेटा कुछ ऐसा कारनामा कर गया
कि धन लुट गया मकान बिक गया
इस धक्के से वह अन्दर तक टूट गया
परन्तु जल्दी ही उसे एक घर मिल गया
एक ऐसा घर
जिसमें न रेत, न ईंटें
न खिड़कियाँ, न दरवाज़े
न किराया, न बकाया
उस अन्तिम घोंसलें में
उस एक शाश्वत घर में
उसे पूरा अनहद विश्राम है
क्योंकि उसका यह अन्तिम विश्राम स्थल
यह पक्का घर
न गिरेगा, न टूटेगा, न बिकेगा

चुरा लो

चुरा लो लोगों की आँखों से आँसू
भर जायेंगे तुम्हारी ख़ुशियों के खज़ाने
मुक्तामणि बन कर आँखों के आँसू
आ जायेंगे कोई मूरत सजाने

चुराने को यूँ तो बहुत कुछ है जग में
मगर काँटे होते हैं चोरी के मग में
ये आँसू की चोरी बड़ी है अनोखी
इन चोरों की राहें किसी ने न रोकीं
करे जो ये चोरी वो पाता दुआयें
उसे प्यार से सब गले लगायें
उसे नेह से पास अपने बुलायें
बड़े प्यार से अपना सुख-दुख सुनायें

ले दुख दूसरे के उन्हें ख़ुशियाँ बाँटे
पड़े न कभी उसकी दौलत में घाटे
ख़ुशी आत्मा की है इक ऐसी दौलत
जिसे पाने के हैं न कोई बहाने
ये है आत्मा से मिलन आत्मा का
जो आता है आपस की ख़ुशियाँ बढ़ाने
चुरा लो लोगों की आँखों से आँसू
भर जायेंगे तुम्हारी ख़ुशियों के ख़ज़ाने

खुशबू से भीगी हवाएँ

घुल गई हवाओं में भीनी सी खुशबू
उपवन में फूलों ने अपना मुख खोल दिया
उड़ चली अम्बर तक महकी हवाएँ
अम्बर भी उनको हँस कर बुलाये
चूम लिया जा कर चंदा और तारों को
बातें कर आई रात की रानी से
लौटकर आई फिर भटकीं अपनी नादानी से
पहुँच गई जाकर खेतों खलिहानों में
गले मिली जाकर गेहूँ की बाली से
रोटी की महक बस गई मन में
खुल गया राज़ मुखड़े की लाली से
जंगल से पर्वत तक नदिया से सागर तक
गुनगुन कर अपनी महक बिखरा दी
ये फूलों की खुशबू से भीगी हवायें
प्यारी धरोहर हैं पावन धरा की

किस रफ़्तार से

ये ज़िंदगी का सफ़र
किस रफ़्तार से चल रहा है
दिन और साल की बात नहीं
लम्हा-लम्हा सदी बन रहा है
किसी मीठे पल का इन्तज़ार है
किसी अपने की तलाश में
किसी अनदेखी राह में
किसी वांछित लक्ष्य की आस में
किसी अजनबी पल की चाह में
किसी अनजाने अहसास में
किसी अँधियारी काली रात में
किसी नए सवेरे की उजास में
किसी नई रचना की प्रक्रिया में
एक कल और एक आज के बीच
पल-पल छिन-छिन
एक नया इतिहास बन रहा है
दिन और साल की बात नहीं
लम्हा-लम्हा सदी बन रहा है
ये ज़िंदगी का सफ़र
किस रफ़्तार से चल रहा है

रौशनी लाने के लिये

रौशनियों के इस शहर में
अँधेरा भी अपनी जगह ढूँढ कर
छुप जाता है मुँह छुपा कर
लेकिन भूलता नहीं अपनी आदतों को
धीरे-धीरे रौंदने लगता है
वहाँ रहने वालों के जज़्बातों को
तोड़ने लगता है उनके अहसासों को
रोकने लगता है उनकी साँसों को
उनकी ज़िंदगी में आई
भूली भटकी रौशनी की किरण
उसे भयभीत करने लगती है
वह अपने साम्राज्य से उस किरण को
निकालने की कोशिश में लग जाता है
ज़िंदगी यूँ ही संघर्ष करती रहती है
ज़िंदगी में रौशनी लाने के लिये
अँधेरों के ज़ुल्म सहती रहती है
रौशनी की एक किरण के लिये
न जाने कितने अँधेरों को
अपने जीवन में जगह देती है
उनसे समझौते करती है

अजब सी है बेचैनी

कदम बढ़ते आगे
है पीछे निगाहें
पता ही नहीं ख़ुद हमें
हम कहाँ हैं
ये बेचैनी कैसी
अजब उलझनें हैं
ज़मी आस्माँ जैसी लगती मुझे है
समन्दर मुझे ऐसा देता दिखाई
कि हर इक लहर में हूँ मैं ही समाई
हर इक फूल में गन्ध मेरी बसी है
मेरे सब तरफ़ बस हँसी ही हँसी है
समेटे हुये रंगीनियों का ख़ज़ाना
रुपहला सुनहला सा चाँदी और सोना
ये सूरज उतर कर समन्दर में कूदा
क्या इसका भी दिल आसमानों से ऊबा
ये पत्ते-पत्ते में कोई किरण-सी
क्यों चमक रही है
ये ज़र्रे-ज़र्रे में छुपी कोई दास्तां सी
क्यों लग रही है
ये कैसी अजब सी बेचैनी
कभी आकाश धरती जैसा
कभी धरती आकाश लग रही है

संसार की रीति

मानव के हृदय और मस्तिष्क
बड़े विचित्र हैं
इनमें न जाने किस-किस के
न जाने कितने-कितने चित्र हैं
कितने ऋण एकत्रित करके
रख लेता है मानव
अपने हृदय में
सुख का ऋण
दुख का ऋण
फिर वें ऋण उमड़-घुमड़ कर
अहसास दिलाते हैं ऋण को चुकाने का
ऐसे समय में आँखें
सच्चे साथी का सा साथ निभाती हैं
हृदय में संचित मोती
आँखों के रास्ते बहाती हैं
मानव रो कर आँसू बहा कर
अन्तर में ऋण
बाह्य जगत को चुका कर
ऋणमुक्त और शान्त हो जाता है
यही हृदय और आँखों की प्रीति है
यही संसार की रीति है

ज़रा सी भूल

क्यों कभी-कभी
किसी की ज़रा सी भूल
किसी की पूरी दुनिया को
जलाकर खाक कर देती है
किसी पूरे परिवार के अरमानों को
राख कर देती है
सड़क पर चलता हुआ
जीता जागता इन्सान
जीवन भर के लिये
सब अपनों के लिये
सपने सजाता इन्सान
किसी लापरवाही का शिकार होकर
सिर्फ़ एक लाश बन जाता है
सबका प्यारा अपना
एक सपना बन जाता है
क्षण भर में एक परिवार का सुख चैन
चिता की आग में जल जाता है
लोगों के लिये एक दुर्घटना हुई
किसने सोचा इस दुर्घटना से
एक परिवार की पूरी पीढ़ी की
ज़िंदगी बदल गई

अपने ढंग के अन्धे

दुनिया के कैसे धन्धे हैं
सब अपने ढंग के अन्धे हैं
कोई मोह पाश में फँसे हुये
करते रहते मेरे अपने
जब अपने दे देते धोखा
तब टूट जायें सारे सपने

कोई धन की भँवर में फँसा हुआ
लालच में है डूबा रहता
खाता रहता तब तक गोते
जब तक न सारा धन बहता

कोई ग्रस्त ईर्ष्या द्वेष में है
दूजे का सुख न लख पाये
दूजों के सुख से जल-जलकर
स्वू सुख का स्वाद न चख पाये

विश्वासघात कोई करता
अपनों पर घात लगाता है
जाने न अपनों का दिया दर्द
कितने आघात लगाता है

इन सबकी जब आँखे खुलती
तब तक है वक़्त निकल जाता
दुख अपनों को पहुँचाने से
सब टूट जायें रिश्ता नाता

ये नहीं जानते भाग्यहीन
कैसे सौभाग्य के मन्दे हैं
सब अपने ढंग के अन्धे हैं
दुनिया के कैसे धन्धे हैं

यही वर्तमान

आओ पुरानी यादों को भुला कर
कुछ नई यादें बना लें
अतीत की राहों को पीछे छोड़ कर
कुछ नई राहें बना लें
जीवन नाम है चलने का
न कि अतीत की गलियों में टहलने का
जब हम चाह कर भी
अतीत को खींचकर नहीं ला सकते
तो क्यों न उन लम्हों को उनके वक़्त के साथ छोड़कर
कुछ नए लम्हों का निर्माण करें
अतीत के आँचल को जितना खींचेंगे
उतना ही बढ़ता जायेगा
रोज़ एक दिन अतीत बंन कर उसमें जुड़ता जायेगा
अतीत की बुरी यादों को भुला देना
अच्छी यादों के ख़ज़ाने को
सावधानी से सहेज कर रख लेना
सिर्फ़ इसलिये कि उन्हें याद करके मुस्कुरा सकें
जीवन भर की दौलत प्यार से रख सकें
शेष भूल कर पीछे छोड़ कर
आगे बढ़ कर कुछ अच्छी नई यादें बना लो
वर्तमान को स्नेह से मन प्राण में बसा लो
आने वाले कल में यही वर्तमान
अतीत की यादें बन कर आयेगा
तुम्हें शान्ति देगा हँसायेगा

तब आयेगा नया प्रभात

पल-पल गिन-गिन बीता दिन
तिनका-तिनका बीती रात
बीते बरस-बरस पलछिन
कब आयेगा नया प्रभात

कैसा यह जीवन का खेला
रोज़ लगे जीवन का मेला
मेले के इस रंगमंच पर
रोज़ चले अभिनय अलबेला
चारों तरफ़ लगा है मेला
मानव फिर भी रहे अकेला
किसी अनोखी चाह में रहकर
तरस-तरस कर काटे रात
कब आयेगा नया प्रभात

बूँद-बूँद से घट भर जाता
बूँद-बूँद से होता रीता
चमत्कार होगा बस इक दिन
इसी आस में रहता जीता
करे शान्ति की खोज
पढ़े कुरान बाइबल गीता
नहीं जानता उसे मिले क्या
खट्टा-मीठा या फिर तीता
कितने जतन करे क्या बनती

कभी भूल से बिगड़ी बात
कब आयेगा नया प्रभात

किन्तु मानकर अपनी गलती
करे प्रायश्चित शुद्ध हृदय से
उसे अवश्य क्षमा मिल जाती
क्योंकि प्रभु तो बहुत सदय हैं
रखे जो विश्वास स्वयं पर
सुने आत्मा की आवाज़
उसके जीवन में न आये
कोई विपत्ति या उत्पात्
तब आयेगा नया प्रभात

क्या यही है जीवन

जीवन
एक भ्रम
कभी मतिभ्रम
कभी दिग्भ्रम
गतिरोध
हर दोराहे पर
दिशाहीन
हर चौराहे पर
अवरुद्ध
मार्ग लक्ष्य का
विरुद्ध
हर तर्क तथ्य का
सन्दर्भ खो गये
प्रयास सो गये
दर्पण में प्रतिबिम्ब
पराये हो गये
न
यह दृष्टिभ्रम नहीं
है केवल
एक भ्रमित
दिग्विमूढ़ आक्रोश
अस्तित्वहीनता का बोध
केवल एक भग्न स्वप्न
क्या यही है जीवन?

कभी-कभी कोई पल

पलभर में ज़िंदगी के
फलसफ़े बदल जाते हैं
ज़िंदगी की किताब के
सफ़ेद काले
लिखे अनलिखे
सफे बदल जाते हैं
दूर पार से कैसी-कैसी
हवायें आ जाती हैं
इन्सान के वजूद को
तिनकों सा उड़ा जाती हैं
राहों में काँटे ही काँटे उग आते हैं
सारे आदर्शों और सपनों में
आ कर चुभ जाते हैं
कभी-कभी कोई पल
आता है मचल कर
दे जाता झोपड़ी को
महल में बदलकर
ज़िंदगी तो यूँ ही
पल का तमाशा है
पल भर में आशा
पल भर में निराशा है
पल-पल रंग बदलती ज़िंदगी को
जो समझ जाता है
सुख-दुख के दिनों में
वह सहज रह पाता है

प्रतिध्वनि

गीत गाऊँ मैं कोई ऐसा
सुनकर जिसको झूमे तन-मन
थिरक उठे जग थिरके के जन-जन
कौंध उठे विद्युत-सी चहूँ दिशि होकर उन्मन
चमके कण-कण
गरजें बादल
बरसे मेघा
बनकर सावन
बोले पपीहा
पिया-पिया पी
कुहू-कुहू
बोले कोयलिया
घुलें गीत
मधुमय समीर में
झाड़ बाँस के
बनें मुरलिया
गीत गाऊँ मैं कोई ऐसा
जिसकी मधुर तान में तन्मय
हो जाये प्रकृति का कण-कण
खग मृग पुष्प भ्रमण वन कानन
ख़ुद को भूल जाऊँ मैं जाकर
बस जाऊँ मीठी बाँसुरिया में
वन उपवन घाटी पहाड़
झरने सागर गहरी नदिया में
झूमे अम्बर झूमे अवनि
सारी सृष्टि में बस आये
मेरे गीतों की प्रतिध्वनि

अँधेरों को भगाना होगा

उजालों को पाने के लिये
अँधेरों को भगाना होगा
रातों को मिटाने के लिये
सवेरों को जगाना होगा
ज़िंदगी मिली
हराने को नहीं
बहारें तो उजाड़ने को नहीं
वक़्त का पल भी गँवाने को नहीं
दिल मिला है तो जलाने को नहीं
ग़म के बादल छँट जाने दो
दुख सहेज लो मन में
सुख को बँट जाने दो
नसीबों की सलवटें हट जाने दो
वक़्त की करवटें बदल जाने दो
दुनिया में कोई भी अनोखा नहीं
कोई नहीं ऐसा
जिसने खाया धोखा नहीं
दर्द और ग़म से भरे दिलों पर
प्रेम का मरहम लगाना होगा
दिलों में लगी आग को
प्यार से बुझाना होगा
उजालों को पाने के लिये
अँधेरों को भगाना होगा

सन्देशा बादलों का

बरसा छम से पानी
मुझको याद आ गई
भूली हुई कहानी
बचपन का वो प्यारा-सा घर
गलियाँ और चौबारे
जहाँ कभी खेले थे हम-सब सखी सहेली सारे
लुका छुपाई पकड़-धकड़ के
दृश्य याद आते हैं
याद आयें झूलों की पींगें
आँसू भर आते हैं
आँगन में जब रिमझिम बारिश में
खाते थे आम
कभी नहीं भूलेगी हमको गपशप की वो शामें
खेल खेलना, पढ़ना लिखना
हँसना गाने गाना
कोई चिंता फ़िक्र नहीं थी कहाँ गया वो ज़माना
बिछड़ गये सब संगी साथी
बे परवाह के ज़माने
बिछड़े सारे बिछड़े प्यारे
बिछड़े दिवस पुराने
आज बादलों में न जाने
कौन सन्देशा आया
आज छमाछम बारिश ने क्यों
भूला याद दिलाया
आज अचानक याद आ गई दुनिया वही सुहानी
बरसा छम से पानी
मुझको याद आ गई भूली हुई कहानी

मेरी बेटी

आस्मां से उतर के आज मेरी कुटिया में
चाँद की चाँदनी की एक किरण आई है
मेरे अँधियारे घर की रौशनी के लिये
गगन से आज धरा पर उतर के आई है
मेरा घर महक उठा आज उसकी ख़ुशबू से
उसकी किलकारियों में महकती पुरवाई है
वन और उपवन सभी है फीके पड़े
मेरा घर मेरी चहकती अमराई है
उसकी बातों में मधुर तान सी लगे प्यारी
माने कान्हा ने कहीं बाँसुरी बजाई है
उसको जब मैं प्यार से सजाती हूँ
लगता है जैसे दीपावली सजाई है
सुख से घर भर दिया है बिटिया ने
मेरे घर में बहार आई है
आस्मां से उतर के आज मेरी कुटिया में
चाँद की चाँदनी की एक किरण आई है

इस बड़े बाज़ार में हर चीज़ बिकती है

जी हाँ- यह दुनिया है
यह दुनिया एक बड़ा अनोखा बाज़ार है
इसे ख़ुद भगवान ने बनाया है
इस बाज़ार के थिएटर में तरह-तरह के रंगमंच है
जिन पर भगवान की बनाई कठपुतलियाँ
अभिनय करती हैं और अपने हिस्से का अभिनय करके
चली जाती हैं पर्दे के पीछे
सबको पता है एक दिन सबको रंगमंच को
सदा के लिये छोड़ कर जाना है
फिर भी न जाने क्यों लोग रहते हैं
किसी न किसी जोड़-तोड़ में
कोई पीछे नहीं रहना चाहता इस दौर में
इस बाज़ार में इन्सान ही ख़रीदते हैं
इन्सान ही बेचते हैं इन्सान ही बिकते हैं
अपनी सफलता और स्वार्थ के लिये
इन्सान कुछ भी कर सकता है
अपना दिल दिमाग़ अपना ज़मीर कुछ भी बेच सकता है
अपना धर्म, अपनी आत्मा, अपना नसीब
अपने बच्चे पत्नी अपना घर द्वार
अपना बसा बसाया सुखी संसार सब बेच सकता है
द्रोपदी दाव पर न लगती तो इतिहास कुछ और होता
न महाभारत का युद्ध होता न भयंकर नरसंहार होता
कभी जब इन्सान स्वयं को दाव पर लगा देता है
तब ख़ुद भी गुलाम बनकर रह जाता है
लालच में पड़कर अपना देश तक बेच देते हैं
जयचन्द का उदाहरण भी उन्हें कुछ समझा नहीं पाता
जयचन्द न होता तो आज भारत का इतिहास कुछ और होता
इस दुनिया में आदमी ही आदमी से बेज़ार है
जी हाँ- यह दुनिया बड़ा अनोखा बाज़ार है

यह दुनिया तुम्हारे लिये नहीं

इज़्ज़त के बदले इज़्ज़त
प्यार के बदले प्यार
कैसी बातें करते हो
श्रद्धा के बदले श्रद्धा
विश्वास के बदले विश्वास
क्यों बातों से ठगते हो
अपनों से अपनापन
परायों से धोखा
क्यों ऐसी बातों से बहलते हो
यह दुनिया-
तुम्हारे लिये नहीं है दोस्त
क्यों भोले मन को छलते हो
दुनिया में अगर जीना है
दिल को कड़ा बना लो
क्यों बर्फ़ सा गलते
और मोम-सा पिघलते हो

मेरा भारत देश

मेरा भारत देश है जिसमें राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर हुये
मेरा भारत जिसमें तुलसी, मीरा, सूर, कबीर हुये
मेरा भारत जिसमें श्री गुरु नानक जैसे संत हुये
मेरा भारत जिसमें तपस्वी ऋषि मुनि संत अनंत हुये
मेरा भारत जिसमें महाराणा प्रताप से वीर हुये
मेरा भारत जिसमें आज़ाद, भगत सिंह से धीर हुये
मेरा भारत जिसमें जन्मी रानी लक्ष्मीबाई
मेरे भारत में जिसने अंग्रेज़ों को नानी याद दिलाई
मेरे भारत में वीरों ने आज़ादी की लड़ी लड़ाई
मेरे भारत में लाखों ने गोरों के हाथों जान गँवाई
मेरे भारत के वीरों ने कभी नहीं हिम्मत हारी
मेरे भारत के लोगों ने सही गोरों की गोली बारी
मेरा भारत जिसमें कमी नहीं है बुद्धि-सुबुद्धि की
मेरा भारत जिसमें कभी न कमी रही समृद्धि की
मेरा भारत ही है जो सोने की चिड़िया कहलाया
मेरा भारत जिसने सभी जातियों धर्मों को अपनाया
मेरे भारत में हिल-मिल कर रहे सभी जातियाँ धर्म
मेरे भारत की एकता का यही बड़ा है सबसे मर्म
मेरा भारत देश कभी न छोड़े अपनी आन
मेरा भारत देश जिसका ध्वज छू ले आसमान

याचक की याचना

हर भगवान के हर मंदिर में भक्तों की भीड़ है
सबकी अपनी-अपनी शिकायतें हैं अपनी-अपनी पीड़ है
समझ में नहीं आता ये दीनानाथ भी कैसे दानी हैं
हर दीन दुखी याचक की बात इन्होंने मानी है
सबकी भावनायें, कामनायें, याचनायें सुनते रहते हैं
अपने हिसाब से सबकी किस्मत बुनते रहते हैं
बचपन में सुनी हुई याद आती है एक कहानी
जिसे बड़े प्यार से सुनाती थी मेरी नानी
एक पिता की दो बेटियाँ चाहती थीं पिता की दुआयें
धोबी को ब्याही बेटी चाहती थी धूप जिससे कपड़े सूखते रहें
किसान को ब्याही बेटी ने भी पिता के सामने आँसू बहाये
पिताजी बीज बोने हैं भगवान से कहो पानी बरसाये
दुनिया भर के मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरों में
करोड़ों भिखारी पड़े हैं उनके दरों में
कर रहे हैं हर देश में हर भाषा में
भावभरी प्रार्थनायें पूरी होने की आशा में
छू लेती हैं दाता के दिल को
जिसके दिल से निकली प्रार्थना
पूरी हो जाती है दाता के दान से
उस याचक की याचना
उसी ने दिया जीवन उसी ने दिया नीड़ है
फिर भी सबकी अलग-अलग कामना अलग-अलग पीड़ है
जैसे बेटियों का दुखियारा पिता सोचता है किसको दे दुआयें
प्रभु से हाथ जोड़कर याचक यही याचना करता है
प्रभु सुन ले दोनों बेटियों की सदायें
उसी तरह हर याचक प्रभु से यही कहता है
प्रभु याचक की याचना पूरी करना आगे तेरी मर्ज़ी

मैं क्यों हूँ अकेला

चल रहा हूँ काफ़िले में
फिर भी मैं क्यों हूँ अकेला
हर तरफ़ तनहाइयाँ हैं
लोग कहते जग है मेला
चलत-चलते क्यों अचानक
रास्ते मुड़ने लगे हैं
उम्र भर दिन-रात मैंने
देखा था सपना सुनहला
मंज़िलों के रास्ते में
क्यों ये चौराहे हैं आये
मैं कहाँ जाऊँ किधर जाऊँ
बताओ क्या झमेला
हर तरफ़ वीरानियाँ
याद आ रहीं नादानियाँ
ज़िंदगी की भीड़ में
मैंने न जाने क्या-क्या झेला
चल रहा हूँ काफ़िले में
फिर भी मैं क्यों हूँ अकेला

कोई भी हल हो न पाये

बन्धु अनगिनत प्रश्न मेरे हृदय में छुपकर हैं बैठे
कोई भी हल हो न पाये तो बताओ क्या करूँ मैं
हर तरफ़ चेहरे ही चेहरे
चेहरों में है राज़ गहरे
दिल हैं काले और अँधेरे
मात्र कुछ चेहरे हैं असली
शेष सब लगते हैं नकली
घूमते मुँह को मुखौटों में छुपाये
कैसे उनको जाना पायें तुम बताओ क्या करूँ मैं
कहते कुछ करते हैं कुछ
काम होते सारे उनके अबूझ
राम मुँह में बगल में छुरियाँ छुपाये
कैसे पहचानूँ उन्हें तुम ही बताओ क्या करूँ मैं
रात में दुष्कर्म करते
दिन में दानी कर्ण बनते
कितने उलझे प्रश्न मेरे मन में आयें
उलझने न सुलझने पायें
कैसी दुविधा में फँसी तुम ही बताओ क्या करुँ मैं
जिधर देखें उधर ही
आयें नज़र उलझन के घेरे
जाने कब आयेंगे वो दिन
आयेंगे जब नूतन सवेरे

इस तरफ़ और उस तरफ़

इस बड़े से संसार के
एक छोटे से कोने में
हरी-भरी धरती के
प्यारे बिछौने में
बसा हुआ था एक देश
जिसमें-
भिन्न-भिन्न थीं भाषायें
भिन्न-भिन्न थे वेश
पहनावे थे अनेक
किन्तु दिल थे सबके एक
फिर अचानक से आई एक आँधी
लेकर अपने साथ दर्द भरी बर्बादी
उसने एक ऐसी आग लगा दी
जिसे रोक नहीं पाये
कोई नेहरू या गाँधी
दिलों में आ गईं दरारें
जो निगल गईं सारे सुख सारी बहारें
बन गये शत्रु जो कल तक थे मित्र
आँखों में भर गई घृणा सी विचित्र
वो धरती
जिसके पूर्व पश्चिम, उत्तर दक्षिण के बीच
राह नहीं रोकते थे कोई पहाड़ या नदियाँ
जिसकी एकता की गवाह हैं बीती सदियाँ
उसके बीच बन गई एक विभाजन रेखा

ऐसा बँटवारा किसी ने नहीं देखा
जिसे बनाया लाशों के पहाड़ों ने
और ख़ून की नदियों ने
मुँह छुपा लिया है शर्म से उन बीती सदियों ने
बरसों तक
इस तरफ़ और उस तरफ़ के लोग
दुश्मनी निभाते रहे
आने वाली नस्लों को भी
दुश्मनी का पाठ पढ़ाते रहे
फिर अचानक एक दिन
नई पीढ़ी के कुछ लोग
उस तरफ़ से इस तरफ़ आये
और इस तरह से उस तरफ़ गये
बड़े हैरान परेशान थे सब
समझ नहीं पा रहे थे दुश्मनी का सबब
वो ही तो हैं सूरज चाँद तारे
वैसे ही तो हैं गीत प्यारे-प्यारे
एक सा रंग एक सा रूप
एक से मौसम एक सी धूप
एक सा है पहनावा
एक सा खाना एक सी बोली
फिर क्यों चल जाती है बात-बात पर गोली
जब इस तरफ़ और उस तरफ़ में
नहीं है कोई भेद
तो क्यों हो गये दिलों में दुश्मनी के छेद
सीमा पर मरने वाले

सभी सैनिकों का ख़ून होता है लाल
बहता हुआ लाल ख़ून कैसे बताये
वो किस तरफ़ से आया
कैसे पहचाने कौन-सा इस तरफ़ का है
कौन सा है उस तरफ़ का
बड़ा विकट है सवाल
ये किस के स्वार्थ ने बाँट दिया प्यार को
कर दिया दूर यार से यार को
धर्म की आड़ में जो सेकते हैं रोटियाँ
लालच में खाते हैं अपनों की ही बोटियाँ
काश कोई देवदूत आकर उन्हें सीख दे
विष बुझे दिलों को प्रेमामृत की भीख दे
एक बार प्रेम से गूँजें
गीता, कुरान, बाइबिल
मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे
सब में मुस्कुरायें प्यार भरे दिल
दिलों से नफ़रत की दीवार चूर हो जाये
इस तरफ़ और उस तरफ़ का भेद दूर हो जाये
सब रहें प्रेम से अपने-अपने घर में
रहें शान्ति और चैन नगर-नगर डगर-डगर में
इस तरफ़ और उस तरफ़ चैन हो शान्ति हो
स्नेह की नदी बहे दूर हर भ्रान्ति हो

मोरे अँगना

घिरी-घिरी आई कारी बदरिया मोरे अँगना
झुकी-झुकी छाई कारी बदरिया मोरे अँगना
जिया नाहीं हरषा
मनवा नाहीं सरसा
सखी कैसे कहूँ मोरे पिया संग ना
घिरी-घिरी आई कारी बदरिया मोरे अँगना
बिजुरी चमके चम-चम
मेघा बरसे छम-छम
मोरे मनवा को हाय कोई गीत आये ना
घिरी-घिरी आई कारी बदरिया मोरे अँगना
कोई पिया को बुलाये
मोरा अँगना सजाये
नाचे मोरी पायलिया बाजे रे कंगना
घिरी-घिरी आई कारी बदरिया मोरे अँगना
गाऊँ होके मगन
छूटे नाहीं लगन
ऐसी लागी समाधि कभी होये भंग ना
घिरी-घिरी आई काली बदरिया मोरे अँगना
मोहे कोई रोके ना
मोहे कोई टोके ना
मोहे सारा तन-मन पिया रंग रंगना
घिरी-घिरी आई कारी बदरिया मोरे अँगना

क्या कभी वक़्त रुका है

क्या किसी के लिये कभी वक़्त रुका है
हर बशर वक़्त के आगे ही झुका है
हर एक पल का हिसाब उसकी नज़र में रहता
हर जुबां पर उसी का नाम शामो-ओ-सहर रहता
हर एक शख़्स है कर्ज़दार उसका
क्योंकि वक़्त ही तो है राज़दार उसका
ख़ुशियों और ग़मों के तमाशे
सुखों की बारिश दुखों के हादसे
वक़्त बड़े-बड़े खेल खेलता है
हर इन्सान वक़्त की मार झेलता है
कौन कर सका है मुक़ाबला वक़्त से
चुकाना पड़ता है वक़्त का कर्ज़ अपने रक्त से
वक़्त के आगे तख़्तो ताज भी झुका है
क्या किसी के लिये कभी वक़्त रुका है

शीतल मन्द समीर

क्या शीतल मन्द समीर चली
महकी उपवन की कली-कली
छू कर फूलों को मुस्काई
इठला कर झूमी गली-गली
खग मृग झूमे जन-जन झूमा
सृष्टि का सब कण-कण झूमा
किरणों का डोला संग लाई
चमकी धरती की अँगनाई
पत्तों से जाकर फुसफुसाई
बाँसों में जाकर सरसराई
जब बजी बाँसुरी मीठी-सी
तब हँसी प्यार से ठी-ठी-ठी
छूती बालों को गालों को
सहलाये प्यार से भली-भली
क्या शीतल मन्द समीर चली
महकी उपवन की कली-कली

एक सावन है

बादलों की गरज जब श्रवण में पड़ी
तब हृदय मेरा मल्हार गाने लगा
नन्ही-नन्ही सी बूँदे जो तन पर पड़ीं
इक अजब सा ख़ुमार मुझ पे छाने लगा
कूकती कोकिला ने ख़बर दी मुझे
देखो अम्बर पर छायें हैं बादल घने
मोर के पंख भी फैल कर हैं सजे
मोरनी को है अब मोर भाने लगा
बिजलियों की बारातें निकलने लगीं
ढोल-ताशे गगन में है बजने लगे
बादलों की सवारी पे चढ़कर कोई
दूल्हा धरती से मिलने को आने लगा
कोई बिरहिन है छुप करके रोई कहीं
कैसे काटे वो सावन बिना साजना
कोई अभिसारिका नाचती है कहीं
साजना पर उसे प्यार आने लगा
एक सावन है कितने दिखाता है रंग
हमको जीने के कितने सिखाता है ढंग
दिलजला कोई है बिरहा गाने लगा
मेघ मल्हार कोई सुनाने लगा
कोई कहता है आकाश रोता है क्यों
मेघ बरसाते हैं अश्रु किस के लिये
कोई हँस करके तन-मन भिगोते हुये
गीत सावन के सबको सुनाने लगा

बेटी के लिये लोरियाँ

जन्म लेते ही
माँ बापू ने नाम रखा रानी
मैं थी उनके महलों से भी बड़े दिलों की रानी
उनके जीवन की मधुर कहानी
बड़े लाड़ प्यार से पाला
पढ़ाया-लिखाया
घर का काम भी सिखाया
फिर किसी वशिष्ठ जैसे पंडित जी से
विवाह का अच्छा सा मुहूर्त्त निकलवाया
एक राजकुमार आया
और मैं उसके साथ आ गई नये घर में
सारे गुण थे माँ बापू के ढूँढे गये वर में
पर शायद मैं ही थी सीता
जिसका भाग्य था रीता
फिर शुरू हो गये वो सारे सितम
जिनके आगे थे सारे ग़म कम
मैं एक ऐसे पिंजरे में क़ैद हो गई
जिसमें से सुख नीचे झड़ जाते थे
सिर्फ़ दुख मेरे लिये रह जाते थे
माँ को कैसे बताऊँ तेरी लाडली
तिल-तिलकर मर रही है
कैसे विष पी-पी कर
नीलकण्ठ बन रही है
सुनकर माँ जीते जी मर जायेगी
फिर वो कैसे मेरी बेटी के लिये
लोरियाँ गायेगी

जीवन का जंगल

आज दिल चाहता है
चुरा लाऊँ कुछ लम्हे
जीवन के जंगल से
अपने लिये
पूछ लूँ कुछ प्रश्न
अपने से
अपने लिये
आज दिल कहता है
क्यों भरी भीड़ में तू अकेली है
क्यों तूने घुट-घुटकर
मौन पीड़ा झेली है
दर्पण ने दिखाया
बालों से झाँकती सफेदी को
धीरे से बोला
देखा - वक़्त कैसे भाग गया
पिघल कर निकल गये
बरस तेरे हाथों से
क्या खोया क्या पाया
इसका अहसास गया
बैठकर अकेली
बस ज़ार-ज़ार रोई मैं
जीवन के जंगल में
काँटों से उलझ-उलझ
छूटने की कोशिश में
जीवन भर खोई मैं
आज शून्य
सिर्फ़ शून्य
कोई लम्हा नहीं मेरा
कहाँ से चुरा लाऊँ
कुछ लम्हें अपने लिये
जीवन के जंगल से

किसी नादानी से

मित्र
घर को घर ही रहने दो
घर के अन्दर स्नेह की लहर बहने दो
अपनी किसी नादानी से
मन की किसी बेईमानी से
घर के हालात ऐसे न बना लेना
कि घर की तरफ़ जाने वाली सड़क
भयानक लगने लगे
घर के मोड़ पर दिल दहलने लगे
पाँव अटकने लगें
रक्त की गति बढ़ने लगे
मति भटकने लगे
स्नेह के स्त्रोत सूखने से पहले ही
हृदय के स्रोत खोल लेना
हर नादानी से पहले ही
हृदय को टटोल लेना
घर को मकान नहीं घर रहने दो
घर के अन्दर स्नेह की लहर बहने दो

माँ की सीख

माँ ने बचपन से सिखाया
बेटी ज़ोर से न बोला करो
आँखें नीची रखा करो
धम-धम करके
जल्दी-जल्दी न चला करो
ज़्यादा न बोलना
ससुराल में किसी को जवाब न देना
सब चुप-चुप सुन लेना
चुप-चुप सह लेना
पति चिल्लाता है
ज़ोर से बोल
क्या मुँह में ज़ुबान नहीं है
मेरी गालियाँ आँख उठाकर सुन
ठीक से समझ
नीचे क्या देख रही है
भागकर क्यों नहीं आती
क्या पैरों में मेहंदी लगी है
जवाब क्यों नहीं देती
और वह सोचती है क्या जवाब दे
माँ ने तो कहा था जवाब न देना
सब कुछ चुपचाप सह लेना
काश माँ मुझे ये सब न सिखाती

उड़ चला मन

उड़ चला आकाश को मन
ढूँढने ऐसे पलों को
जो अभी तक मिल न पाये
मुड़ चला मन
पर्वतों की ओर
उन आकाश छूती चोटियों पर
चढ़ चला मन
फिर ज़रा नीचे उतरकर
रम गया उन पर्वतों की
गोदियों में पसर कर लेटी
रंगाली घाटियों में वादियों में
ढूँढता दीवानगी में फूल ऐसे
जो अभी तक खिल न पाये
क्या करें मन तो है बंजारा
भटकता फिर रहा है दर बदर
हाथों में ले
टूटा हुआ सा इकतारा
बजाकर गा रहा
अपने हृदय का दर्द
निकलती ही रही दिल से हवाएँ
कभी गर्म कभी सर्द
करे क्या लाख कोशिश की दबाने की
मगर ये होंठ सिल न पाये
रो रहा मन याद कर ऐसे पलों को
जो अभी तक मिल न पाये

बड़ा शिकारी

जंगल में स्वतंत्रता से विचरते
बेज़ुबान जानवरों को
चहचहाते गाते
उन्मुक्त उड़ाने भरते
भोले पक्षियों को
धोखे से
बन्दूक से मार कर
मानव
स्वयं को बड़ा शिकारी
बड़ा बहादुर समझता है
काश वह
इसी बहादुरी से
शिकार करता
अपनी अत्याचारी प्रवृत्ति का
अपनी नृशंसता का
अपने जिह्वा के चटोरपन का
अपने हृदय के कठोरपन का
अपने लालच का
अपने स्वार्थ का
तो वह और बड़ा शिकारी होता

कितना सुख-दुख मिला

सोचने से अगर
बदल जाते
सुर ज़िंदगी के
हमको भी आ जाते
जीने के गुर
ज़िंदगी के
बहुत बड़ा फ़र्क होता है
सोचने और होने में
क्या सोचा था
क्या हुआ
ज़िंदगी बीत जाती है
यही सोच कर रोने में
क्या खोया
क्या पाया
कितना सुख मिला पाने में
कितना सुख मिला खोने में
ज़िंदगी भी
अजब तमाशा है
कुछ कट जाती है काटने में
कुछ कट जाती है बोने में

बेटी और चिड़ियाँ

मेरे आँगन में एक पेड़ है जिस पर रोज़
सैकड़ों चिड़ियाँ आ कर बैठती थीं
इस डाल से उस डाल पर
इस शाख से उस शाख पर
कूदती थीं, झूलती थीं, ऐंठती थीं
मैं उनके लिये दाना बिखेरती थी
सारी चिड़ियाँ फुदक- फुदक कर
एक-एक दाना चुग लेती थीं
पानी के बर्तन से पानी पी लेती थीं
मेरा सारा आँगन चू-चू के कलरव से गूँज उठता था
मैं ओट में बैठकर रोज़ यह स्वर्गीय दृश्य देखती थी
कुछ समय से अचानक मेरा आँगन सूना हो गया
मेरा पेड़ चिड़ियों की प्रतीक्षा में बूढ़ा हो चला
मैं बार-बार आँगन में जाकर पेड़ पर चिड़ियों को ढूँढती
पर एक भी चिड़िया वहाँ नहीं आई कहाँ चली गई
मैं इन्तज़ार करती थक गई
फिर एक दिन अख़बार में ख़बर पढ़ी
घरेलू चिड़ियाँ गायब हो गईं
किसी को पता नहीं कहाँ गईं
मेरी प्रतीक्षा का तार यकायक टूट गया
हृदय का दर्द आँखों से फूट पड़ा
वे चिड़ियाँ कब मेरी अपनी बन गईं पता ही न चला
आज उनके जाने का दर्द वैसी ही अनुभूति दे गया
जैसी बेटी की विदाई के समय हुई थी
कहाँ गई मेरी चूँ-चूँ चिड़ियाँ कैसी होंगी कब आयेंगी
हे भगवान जहाँ भी हों ख़ुश हों
फुदक रही हों चहक कर रही हों

तेरे भी ढंग निराले हैं

ख़ुद ही देता ख़ुद ही लेता
तेरे भी ढंग निराले हैं
तेरे ही दिए अँधेरे हैं
तेरे ही दिए उजाले हैं
मैं भँवर में जब फँसा
साहिल पे पहुँचाया मुझे
और दूसरे क्षण वहीं
लहरों से खिंचवाया मुझे
जब भी चाहा उड़ के मैं
आकाश से बातें करूँ
पंख मेरे काटकर
धरती पे पहुँचाया मुझे
दे दिया संकेत मुझको
लक्ष्य तक जाने का फिर
एक ही झटके से मेरे
पथ से भटकाया मुझे
सब्ज़ बाग़ दिखाये ढेरों
फूल और फल से भरे
और फिर काँटों के झाड़ों
बीच अटकाया मुझे
बोलने को एक लम्बी जीभ देता
बोलने का हक़ है हमसे छीन लेता
मुझको अँगुली पे नचाने के
तू जाने अजब बहाने है
ख़ुद ही देता ख़ुद ही लेता
तेरे भी ढंग निराले हैं

आस विश्वास और लक्ष्य

मिटने न दो विश्वास को
न धोखा देना और के विश्वास को
आस और विश्वास ही
दो शक्तियाँ जो साथ हैं
इनके बल पर काम करते
मनुज के दो हाथ हैं
बुद्धि का उपयोग भी न भूलना साथी मेरे
बुद्धि से ही सफल होते कर्म सब साथी मेरे
अपनी शक्ति और बुद्धि से जो लेता काम है
वह नहीं होता कभी जीवन में फिर नाकाम है
आस और विश्वास लेकर
सत्य पर चलते चलो
विजित कर संघर्ष को तुम
लक्ष्य पर बढ़ते चलो

मैंने सब से कहा ''मैं हवा''

सबने मुझसे कहा
कौन तुम कौन तुम
बात करतीं नहीं
तुम क्यों दिखतीं नहीं
मैंने उनसे कहा
चाहे दिखती नहीं
बात करती नहीं
साथ रहती हूँ सबके
सदा मैं सदा
मैं हवा, मैं हवा
शिला से धूल से
शूल से फूल से
पेड़ की डाल से
गेहूँ के बाल से
नदियों सागर से जा करके
मैंने कहा
मैं हवा, मैं हवा
मैं इधर को मुड़ी
मैं उधर को मुड़ी
मन ने जिससे कहा
मैं उसी से जुड़ी
घूमी मैदान में
पर्वतों पर चढ़ी
उपवनों में हँसी
जंगलों में फँसी

पत्तों से सरसरा कर
निकलने लगी
सबको ऐसा लगा
बाँसुरी सी बजी
बाँस में संगीत मैंने भरा
प्रकृति का हर रंग
मुझमें बहा
मैं हवा, मैं हवा
मैं निखर कर चली
मैं बिखर कर चली
मैं उछल कर बही
मैं मचल कर बही
मन्द गति से कभी
मैं विचरने लगी
आँधियाँ सी चलाकर
कभी यह कहा
मैं हवा, मै हवा
मैं महकती चली
मैं बहकती चली
साँसों के गीत पर मैं
थिरकती चली
लहरों पर नाचती
गीतों को बाँचती
सृष्टि के ज़र्रे-ज़र्रे में
हँसती रही
जानती हूँ बिना मेरे
जीवन कहाँ
मैं हवा, मैं हवा

मैं कभी हूँ गरम
मैं कभी हूँ नरम
मैं कभी बर्फ़-सी ठंडी हो जाती हूँ
लोग घबरा के बेहाल हो जाते हैं
एक पल को अगर बन्द हो जाती हूँ
बन्द पल पर मगर मैं तो होती नहीं
काम हरदम करूँ किन्तु रोती नहीं
मैं हूँ सबके लिये
ज़िंदगी की दवा
मैं हवा, मैं हवा
ईश ने एक जो
काम मुझको दिया
मुझको करते ही रहना है
उसको सदा
मुझको थकना नहीं
मुझको रुकना नहीं
एक क्षण को भी
रुकती नहीं है हवा
मैं हवा, मैं हवा

एक इंतज़ार

न कुछ पाने की चाहत है
न कुछ खोने का डर
बड़े सुकून से कट रहा है
ज़िंदगी का सफ़र
जो बीत गया बहुत अच्छा था
कुछ झूठा था कुछ सच्चा था
वक़्त तो पंख लगा कर उड़ गया
वर्तमान अतीत में जुड़ गया
पीछे रह गए कुछ प्रश्न
जो सुलझ नहीं पाये
कुछ बातें जो हम समझ नहीं पाये
कुछ उत्तर जो हम दे नहीं पाये
कुछ बातें जो हम कह नहीं पाये
ज़िंदगी तो वक़्त की सहेली है
वक़्त के साथ रंग बदलती ज़िंदगी
अपने आप में एक पहेली है
फिर भी एक वक़्त ऐसा आता है
जब कहना-सुनना
उलझाना-सुलझाना
समझना-समझाना
सब बेमानी हो जाते हैं
क्योंकि अब ज़िंदगी की शाम् है
न सुबह न दोपहर
अब न कुछ पाने की चाहत है
न कुछ खोने का डर
है सिर्फ़ इन्तज़ार एक ऐसी रात का
होती नहीं जिसकी सहर

संघर्षों की गाथा

जीवन संघर्षों की गाथा
संघर्षों ने इसको पाला
जीवन भर जीवन है पीता
संघर्षों की तीखी हाला
संघर्षों की आग में तपकर
जीवन खरा स्वर्ण है बनता
बिना यत्न के पाया जो भी
सदा हृदय को उन्मन करता
संघर्षों की राहों को तो
धीर वीर मानव ही चुनता
उन ऊबड़-खाबड़ राहों में
स्वप्न अनोखे अपने बुनता
संघर्षों से मिले लक्ष्य को
जब पा जाता है मतवाला
उस जैसा सुख दे सकती क्या
कभी किसी को कोई हाला

मेरी फ़ितरत नहीं

हाशिये पर बैठ कर जीना मेरी फ़ितरत नहीं
और कर पाऊँ बड़ा कुछ अब मेरी ताक़त नहीं
अपनी ताक़त पर बसर की आज तक जो ज़िंदगी
घुट रही पिंजरे में जैसे आज-कल तो ज़िंदगी
कतरा-कतरा ज़िंदगी कट-कट के गिरती जा रही
एक दीमक सी लगी जो ज़िंदगी को खा रही
छोटी-छोटी ख़्वाहिशें अरमान भी थोड़े से थे
छोटी-सी इस ज़िंदगी के ख़्वाब भी छोटे से थे
जी रही थी तनहा-तनहा फिर भी मैं ख़ुश थी बड़ी
रूह ज़िंदा थी अना भी चैन-सा था हर घड़ी
आज कुछ बदला सा मौसम मुझसे कुछ कह सा रहा
मेरी आँखों से ये खारा अश्क सा क्या बह रहा
हाशिए पर बैठकर मैं दिल जिगर का क्या करूँ
ऐ मेरे दिल तू बता इस ज़िंदगी का क्या करूँ
मैं गिले-शिकवे करूँ कुछ यह मेरी आदत नहीं
हाशिये पर बैठ कर जीना मेरी फ़ितरत नहीं

जीवन को जीवन से डर

जीवन को जीवन से
डर लग रहा है
यह आदमी
धीरे-धीरे क्यों मर रहा है
शायद जीवन की राहें
बहुत ऊबड़-खाबड़ हैं
काँटे ही काँटे हैं
झाड़ है झंखाड़ हैं
अँधेरे हैं चारों तरफ़
कहीं भी प्रकाश नहीं
धोखा द्वेष और ईर्ष्या
कहीं भी विश्वास नहीं
तपती धूप और ग़र्म हवाएँ
छाया की आस नहीं
कोई शीतल झोंका आयेगा
इसका आभास नहीं
लगता है जीवन तो सिर्फ़ दण्ड है
आदमी का जीवन भी कितनाा उद्दण्ड है
नयनों में अश्रु
और अन्दर तूफ़ान है
होंठों पर फिर भी
इक झूठी मुस्कान है
जीवन चल रहा है
आदमी चल रहा है
फिर भी यह आदमी
धीरे-धीरे क्यों मर रहा है
शायद जीवन को जीवन से
डर लग रहा है

कम बोलो

कम बोलना ही समझदारी है
यह छोटा सा वाक्य उन्हें
बड़ा अच्छा लगा
आजकल वे रोज़
दो-तीन घंटे तक
कम बोलने के लाभ समझाते हैं
कभी-कभी वे कम बोलने की कोशिश में
तीन चार घंटे के लिये भी
उलझ जाते हैं
उनके चाहने वाले
जो बिना माथे के बल दिखाये
सुनते हैं उनकी बातें
अपने हिस्से का
कम बोलने का कर्त्तव्य नहीं भूलते
उनकी कम बोलने की लम्बी सलाह पर
उनकी तारीफ़ के लम्बे-लम्बे कसीदे पढ़ना
कभी नहीं भूलते

आत्मकथा-एक डोली की

सड़क के सफ़र पर जाते, रास्ते में जो पड़ते ढाबे
वहाँ चाय पीने का, खाना खाने का अलग ही आकर्षण होता है
ऐसे ही राजस्थान के एक ढाबे के पास हमारी गाड़ी रुकी
देखा कुछ बाराती लगने वाले लोग चाय पी रहे थे
भरपूर आनन्द में साथ साथ गा भी रहे थे
पास में एक डोली रखी थी दुल्हन उसके अन्दर ही बैठी थी
डोली में बैठी दुल्हन को देखने की मन में उत्सुकता हो रही थी
तो पास बैठे बाराती से दुल्हन देखने की आज्ञा माँगी
धीरे से डोली का पर्दा उठाया, पर दुल्हन को देखते ही आकर्षण ने
क्रोध, कुण्ठा और दर्द का स्थान ले लिया
अन्दर लगभग ग्यारह बरस की नन्ही मासूम छोटी सी बालिका
सहमी हुई डरी-डरी सी बैठी थी
मैं बिना बच्ची से बोले ही डोली का डंडा पकड़ कर खड़ी हो गई
उसका भविष्य, उसका आगे का जीवन क्या होगा
कैसा होगा, अच्छा होगा या बुरा होगा
अचानक ही लगा मेरे दिल में
किसी की दर्द भरी आवाज़ आ रही थी
जो कानों को नहीं हृदय को छू रही थी
जी हाँ, मैं बोल रही हूँ डोली आप सुन रही हैं न?
आपकी हालत देख कर मैं भी अपनी हालत दिखाना चाहती हूँ
काठ की हूँ तो क्या आज मैं भी अपनी आत्मकथा सुनाना चाहती हूँ
जब-जब एक नवविवाहिता मेरे अन्दर बैठती है
मेरे दिल में कुछ चटख-सा जाता है
वह बारह बरस की है या बीस बरस की
मेरे अन्दर बैठते ही उसका जीवन नया और अलग हो जाता है
सब छूट गये- उसके माँ-बाप, भाई-बहन, सखी-सहेली
उसका गाँव उसकी गलियाँ चौबारे और पिता की हवेली

कहाँ मिलेंगे नाना नानी दादा दादी चाचा चाची बुआ मौसी और हमजोली
पर मैं क्या करूँ मुझे तो उठाना ही है
नई दुल्हन को ससुराल ले जाना ही है
दुल्हन आ कर बैठी मैं अपने रास्ते पर हो ली
मैं क्या करूँ मैं तो हूँ डोली जो सिर्फ़ डोलती है वही डोली
न जाने इस दुल्हन के भाग्य में क्या लिखा है
इसके भाग्य में गुलाब के फूल भी होंगे या सिर्फ़ काँटे
भगवान ने तो सुख दुख सबको है बाँटे
फिर ऐसा क्यों होता है कोई हँसती है कोई रोती
कोई जीवन भर तारे गिनती रहती है कोई सुख की सेज है सोती
कोई सुहागन तो कोई सुहागन भी अभागन
जीवन भर चलती रहती है यह आँख मिचौली
पर मैं अपना दिल किसे दिखाऊँ मैं तो हूँ एक डोली
आज तुम्हें हृदय से दुखी देखा
तो अपना हृदय तुम्हारे सामने खोल दिया
शायद तुम्हारे दिल तक मेरी आत्मकथा पहुँच जाये
वरना मैं क्या कहूँ सिर्फ़ एक डोली
कहारों ने उठाया मैं अपनी डगर पर हो ली
ऐसी ही एक दुल्हन से पन्द्रह बरस बाद मिली
आज उसकी तेरह बरस की बेटी मेरे साथ विदा होगी
पर अपनी पुरानी दुल्हन को देख कर मैं रो पड़ी
क्या यह वही बच्ची बुढ़िया-सी बन कर सामने है खड़ी
आज उसकी बेटी को ले जा रही हूँ
भगवान उसको अपनी माँ जैसा जीवन न दे
उसकी बिटिया को सुखी होने का आशीर्वाद देकर
मैं फिर अपनी डगर चली
मैं तो डोलती रहती हूँ- हाँ मैं हूँ डोली

यादों के ज़ख्म

यादों के झरोखों में झाँक कर
निकाल लाई हूँ कुछ पल
जो कभी जिये थे
अन्तर की पर्तों में झाँक कर
देख आई हूँ वो घाव
जो कभी सिये थे
ज़ख्म हरे नहीं हैं
पर भरे भी नहीं हैं
सिए हुये टुकड़ों के
दाग अभी बाक़ी हैं
दिल की पर्तों में छुपी
आग अभी बाक़ी है
कभी ये दाग मेरी तन्हाइयों में
यादों का एक मेला लगा देती हैं
और कभी ये ही मुझे
भीड़ में अकेला बना देती हैं
कभी ये सूखे जख़्म
अचानक टीस उठते हैं
यादों के इन्हीं ज़ख्मों में
हम पिसते हैं
घुटते हैं
लुटते हैं

आया नव वर्ष

आया नव वर्ष
क्या खोया
क्या पाया
कितना उत्कर्ष
कितना अपकर्ष
आया नववर्ष
टूट गये कुछ रिश्ते
कुछ भावनायें चटक गईं
रक्त माँस हुये सस्ते
कुछ आत्मायें भटक गईं
कैसे कोई जिये
जीवन दुर्द्धर्ष
आया नव वर्ष
कितने युग बीत गये
बुद्ध हमें भूल गये
अहिंसा परम धर्म के
शब्द हमें भूल गये
खण्डित आदर्शों को
लुण्ठित मान्यताओं को
टूटे विश्वासों को
फिर से जोड़ पाना
है भीषण संघर्ष
आया नववर्ष
आता ही रहेगा नववर्ष

ज़िंदगी की बेवफ़ाई

मैंने तुझसे बहुत नहीं माँगा
मैंने तुझसे बहुत नहीं चाहा
तुझसे बस एक ही शिकायत है
ज़िंदगी तूने बेवफ़ाई की
ग़म और खुशियाँ मिलें कितने
ये तो अपना नसीब होता है
रौशनी ले के जो चला आये
वो ही दिल के करीब होता है
कोई कब ज़िंदगी में आ जाये
कोई चुपके से फिर चला जाये
कोई अपना बनाके पल भर में
उम्र भर के लिये बिछड़ जाये
कोई राहों में थोड़ा साथ चले
बीच में छोड़कर चला जाये
कोई वादों में बाँधकर इक दिन
मुँह को मोड़कर चला जाये
मैंने तुझसे बहुत नहीं माँगा
थोड़ा सा प्यार भर तो माँगा था
ज़िंदगी क्या यही वफ़ा तेरी
तूने छीना वही जो मैंने चाहा था
ये तेरी कौन सी इनायत थी
कौन सी ये अदा दिखाई थी
तुझसे बस एक ही शिकायत है
ज़िंदगी तूने बेवफ़ाई की

कितने अकेले

विचारों के रेले जब आते हैं
तो आते ही चले जाते हैं
भविष्य के सपने
वर्तमान की सच्चाईयाँ
अतीत के मेले
जब-तब आते हैं
जाने क्या-क्या बताते हैं
कभी हँसाते हैं
कभी रुलाते हैं
पल-पल सताते हैं
सोते में जगाते हैं
सामने आ जाते हैं
उन लम्हों के चित्र
जो समय-समय पर झेले
चित्रों में सभी तो आते हैं
दूर पार के रिश्ते
जीवन में आये
कुछ शैतान, कुछ फ़रिश्ते
समय के साथ-साथ
चित्र बदल जाते हैं
तोते की तरह आँख फेर कर
मित्र बदल जाते हैं
चारों तरफ़ दोस्तों
और दुश्मनों के हैं मेले
पर भीड़ में भी हम हैं कितने अकेले
क्यों कभी-कभी हम घबरा जाते हैं
विचारों के रेले जब आते हैं

ईश न कभी गिराना अपनी दृष्टि से

दर्द भरो मेरे आँचल में चाहे सारी सृष्टि के
मेरे ईश न कभी गिराना मुझको अपनी दृष्टि से
यह दुनिया है बड़ी अनोखी
तूने कभी क्या दुनिया देखी
देखी होती तो हमें बचाता
बेईमानों से हमें छुड़ाता
कैसे-कैसे लोग यहाँ हैं
भाई का दुश्मन भाई यहाँ है
हर घर में है विभीषण बैठे
जाने किस ताक़त पर ऐंठे
उनका यही काम होता है
हर घर को लंका है बनाना
अंग्रेज़ों ने उन्हें सिखाया
फूट डालकर शासन करना
पर धर्म कौन-सा उन्हें सिखाता
अपनों में ही फूट डालना
ईश्वर से भी नहीं वो डरते
क्या कर पायें पिता और माता
बड़े अजब दुनिया के मेले पग-पग पर हैं यहाँ झमेले
कल जो हिल-मिलकर थे गाते पल में टूटे वो रिश्ते नाते
अपने पराए की क्या परिभाषा मुझे समझायेगी कौन सी भाषा
हे मेरे प्रभु मुझे बचा लो अपनी अनोखी सृष्टि से
करो कृपा मुझ पर हे ईश्वर अपनी दया की दृष्टि से
दर्द भरो मेरे आँचल में चाहे सारी सृष्टि के
मेरे ईश न कभी गिराना मुझको अपनी दृष्टि से

दोहे

साधो मन है बावरा जहाँ-तहाँ मँडराये।
घर-घर झाकत जायेके निज मन झाँक न पाये।।

अपना-अपना करत है, अपना होत न कोय।
जो अपना सपना समझ, सपना अपना होय।।

साधो मैंने देख ली दुनिया तो है गोल।
मन दुखियारा रो पड़े देख ढोल में पोल।।

तेरा साई देखता तेरे सारे काम।
भले काम के मिलेंगे तुझको चोखे दाम।।

तेरी मेरी जो करे जग उसको ठुकराये।
तेरी मेरी छोड़ दे जग अपना बन जाये।।

जो तू सबको मान ले अपने मन का मीत।
मन पर तेरी जीत तो जग पर तेरी जीत।।

चढ़ते सूरज को सदा करते सभी सलाम।
जो गिरते को थाम ले बन जाता भगवान।।

ये ज़िंदगी सँवर जाये

कभी तो आके मेरे सपनों को सजा जाओ
तुम्हारे आने से ये ज़िंदगी सँवर जाये
कभी पलों को बदल दो सुनहरे बरसों में
तुम्हारे साथ से ये ज़िंदगी बदल जाये
चाहता तो बहुत कुछ हमारा दिल लेकिन
थोड़ा सा साथ दो तो ये बहल जाये
ज़िंदगी इक जगह ठहर सी गई
तुम अगर साथ दो तो चल जाये
थक गये चलते-चलते राहों में
तुम जिधर मोड़ दो उधर जाये
दूर हों ज़िंदगी के अँधियारे
एक बार फिर नई सहर आये
सोना भी हो गया दुश्वार अब तो
ऐ ख़ुदा ज़िंदगी सँवार अब तो
सुनने में कुछ अजीब सा लगता
ज़िंदगी ही ज़िंदगी पर कहर ढाए
ज़िंदगी के सुर बिगड़ न जायें कहीं
कोई सरग़म सुरों में भर जायें
मेरे वीरान सूने सपनों में
कोई मीठी सी धुन बजा जाये
कभी तो कोई आ जाये
मेरे सपनों को आके सजा जाये

प्रश्नों के गुच्छे

होंठों पर लिपटे शिकायतों के गुच्छे
खुलना चाहते हैं कभी
होंठों पर चिपकी कुछ नई पुरानी बातें
होंठों की गोद से छूटना चाहती हैं कभी
दिल के कोनों में छुपी कुछ कहानियाँ
कोनों से बाहर आना चाहती हैं कभी
दिमाग़ में छाये कुछ प्रश्न
दिमाग़ से उनके उत्तर चाहते हैं कभी
वो अपने पराए
जो दिलोजान से प्यार करते थे कभी
वही हमारे अपने पराये क्यों सताने लगते हैं कभी
क्यों होम करते हुये हाथ
जल जाते हैं कभी
क्यों अपनों के दिये दर्द
दिल ही में दफ़्न करते पड़ते हैं कभी
क्यों होंठों तक आते-आते दर्द
वापिस मुड़ जाते हैं कभी
क्यों कभी अपनों से कभी समाज से
या ख़ुद से ही डर जाते हैं कभी
क्यों सारी ज़िंदगी ये अनजाने डर
डराते, सताते, रुलाते रहते हैं कभी न कभी
बहुत से प्रश्नों के गुच्छे
होंठों पर लिपटे रह कर भी
अनखुले रह जाते हैं
ज़िंदगी भर होंठ इन अनखुले गुच्छो से बँधे
मुस्कुराते रहते हैं जबकि होंठों पर लिपटे
शिकायतों के गुच्छे खुलना चाहते हैं कभी

ये सोच के हँस लेते हैं

तुम क्या हँसोगे हमारे नसीब पर
हम तो ख़ुद ही अपनी बदनसीबी पे हँस लेते हैं
जब-जब अपनों ने दिए धोखे हमको
हम अपनी और उनकी करीबी पे हँस लेते हैं
जानते हैं अपने ही हमें दे सकते हैं धोखे
हम तो बस उनकी सोच पे हँस लेते हैं
ज़िंदगी में बहुत कुछ दिखाया और सिखाया हमको
हम ही वैसे न बन पाये ये सोच के हँस लेते हैं
लोग कहते हैं ज़माना बड़ा ख़राब है
क्या हम ज़माने में नहीं यह पूछ के हँस लेते हैं
भले और बुरे का फ़लसफ़ा क्या है
क्या आज तक कोई बता पाया ये सोच के हँस लेते हैं
किससे हम रुठेंगे कौन मनायेगा हमें ऐ दिल
हम तो ख़ुद ही रूठ कर ख़ुद को मना कर हँस लेते हैं
ये ज़िंदगी भी क्या-क्या खेल खिलाती है हमें
ज़िंदगी की इस ज़िंदादिली पे दिल खोल के हँस लेते हैं

संसार कितना सुन्दर होता

वह फाँसी की सज़ा पाया हुआ एक क़ैदी था
फाँसी का मुहूर्त दो दिन बाद का निकला था
दो दिन पहले की संध्या बेला में
बाहर खड़े क़ैदी की दृष्टि अचानक
जाते दिन और आती रात के बीच
इतराते, बलखाते, तरह-तरह की शक्लें बनाते
क्षण-क्षण में रंग बदलते
पल-पल में ढंग बदलते
नीले, पीले, संतरी, रक्तवर्णी बादलों पर पड़ गई
उनकी रंग-ढ़ंग बदलती आकृतियाँ दिल में गड़ गई
याद आ गया वह बचपन
जब वह घंटों इन आकृतियों में डूबा रहता था
कैसी-कैसी शक्लें बनाते थे बादल
जिनको देखने के लिये
शाम की प्रतीक्षा में वह रहता था पागल
दूसरे पल वह आकाश से धरती पर आ गया
उसके सूखे होंठों से
केवल एक वाक्य निकला
जो किया वो न किया होता
तो यह संसार कितना सुन्दर होता

बड़े वृक्ष के साये में पलने वाले

हम तो बड़े वृक्ष के साये में पलने वाले
छोटे-छोटे पौधे हैं
हम कभी भी छायादार वृक्ष नहीं बन पायेंगे
हमें सुख दे देकर सुखा दिया गया है
हम कैसे किसी को सुख दे पायेंगे
काश हमें इतनी सुरक्षा
इतनी अधिक प्यार भरी छाया न मिली होती
तो हम भी सिर उठाकर
आत्मविश्वास से पनप सकते
कैसी विडम्बना है जीवन की
कभी-कभी अधिक प्यार और सुरक्षा का वातावरण
सुख को दुख में बदल देता है
अधिक छाया अधिक धूप से अधिक कष्ट दे जाती हैं
सचमुच कभी-कभी बड़े वृक्ष के नीचे
छोटे पौधों की ऊँचा उठने की
गति रुक जाती है
हम तो किसी का हाथ पकड़ कर चलने वाले
हर पल किसी की छाया, किसी के इशारे
किसी की अँगुली पकड़ कर चलने वाले
सहारा चाहने वाले अन्धे हैं
हम तो बड़े वृक्ष के साये तले पलने वाले
छोटे छोटे पौधे हैं

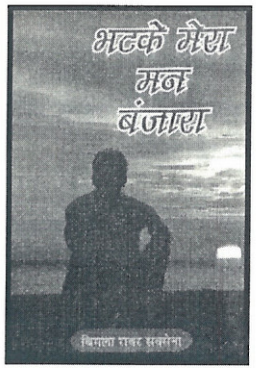

भटके मेरा मन बंजारा संग्रह से -

''आज मेरे मोती पूरी कुंठाओं के साथ
जीवन के कई तीखे तीते अनुभवों के साथ
पीड़ा और कड़वाहट को साथ लेकर
आड़ी-तिरछी रेखाओं के रूप में
काग़ज़ पर बिखरते हैं
मेरी पीड़ा उन्हें थपकियाँ देकर बहलाती है
किन्तु -
पल-पल एक वक्र रूप लेकर
मेरी मोती माला काग़ज़ पर बिखर जाती है।''

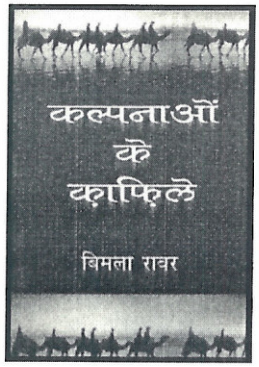

कल्पनाओं के क़ाफ़िले संग्रह से -

मत रो मैना इस पंजरे में, आँसू नहीं बहाते हैं
इस कूचे में रहने वाले, कभी नहीं मुस्काते हैं

वक़्त इन्सान के हालात बदल देता है!
वक़्त इन्सान के ज़ज़्बात बदल देता है,
वक़्त इन्सान के अहसास बदल देता है,
वक़्त इन्सान के दिन रात बदल देता है!!

अनुभव संग्रह से -

मेरे अन्तर के सागर में
जीवन जल बन तुम रहते
जब मिलना चाहूँ मैं तुमसे
आँखों के बाहर बहते

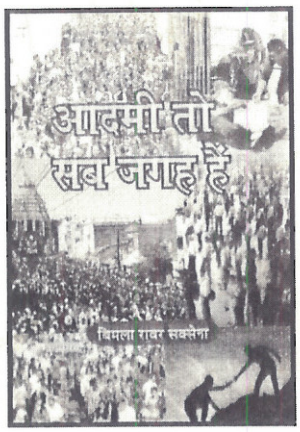

आदमी तो सब जगह हैं संग्रह से -

'यह कैसा नगर है' / कोई किसी को जानता नहीं
शायद खुद को भी पहचानता नहीं

निर्धन की सूखी होली भी / साज़ों पर फाग सुनाती है
दीवाली के दियों में / जलता है खून गरीबों का....

'औरत को परिभाषा / बचपन में पिता की
जवानी में पति की बुढ़ापे में संतान की गुलाम होती है'

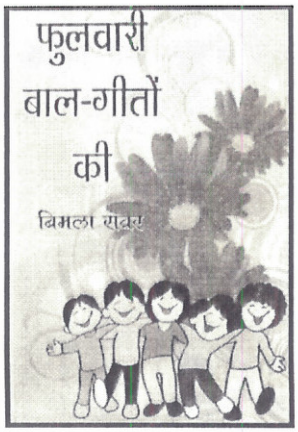

फुलवारी बाल गीतों की संग्रह से -

मेरी पुस्तक प्यारी-प्यारी
दुनिया भर से न्यारी-न्यारी
सुन्दर-सुन्दर चित्रों वाली
अच्छे-अच्छे मित्रों वाली
इसमें लिखी वही कहानी
जिसे सुनाती मेरी नानी
पापा ने यह पुस्तक ला दी
मुझे पढ़ाती मेरी दादी
मुझको अच्छी लगती पुस्तक
मैंने पढ़ ली सारी-सारी
मेरी पुस्तक प्यारी-प्यारी
दुनिया भर से न्यारी-न्यारी

"प्रतिध्वनि"

काव्य-संग्रह

आपको कैसा लगा ?

अपने प्रश्न, जिज्ञासा व सुझाव

के लिए

श्रीमती बिमला रावर सक्सेना को

आप पत्राचार कर सकते हैं या फ़ोन कर सकते हैं।

पता :– बी–45, न्यू कृष्णा पार्क, धौली प्याऊ, नई दिल्ली–110018

फ़ोनः– 011.25533221